शताब्दी प्रकाशमाला

स्वामिनारायण प्रकाश

सदस्यता शुल्क ₹. 60/-
मार्च, 2021

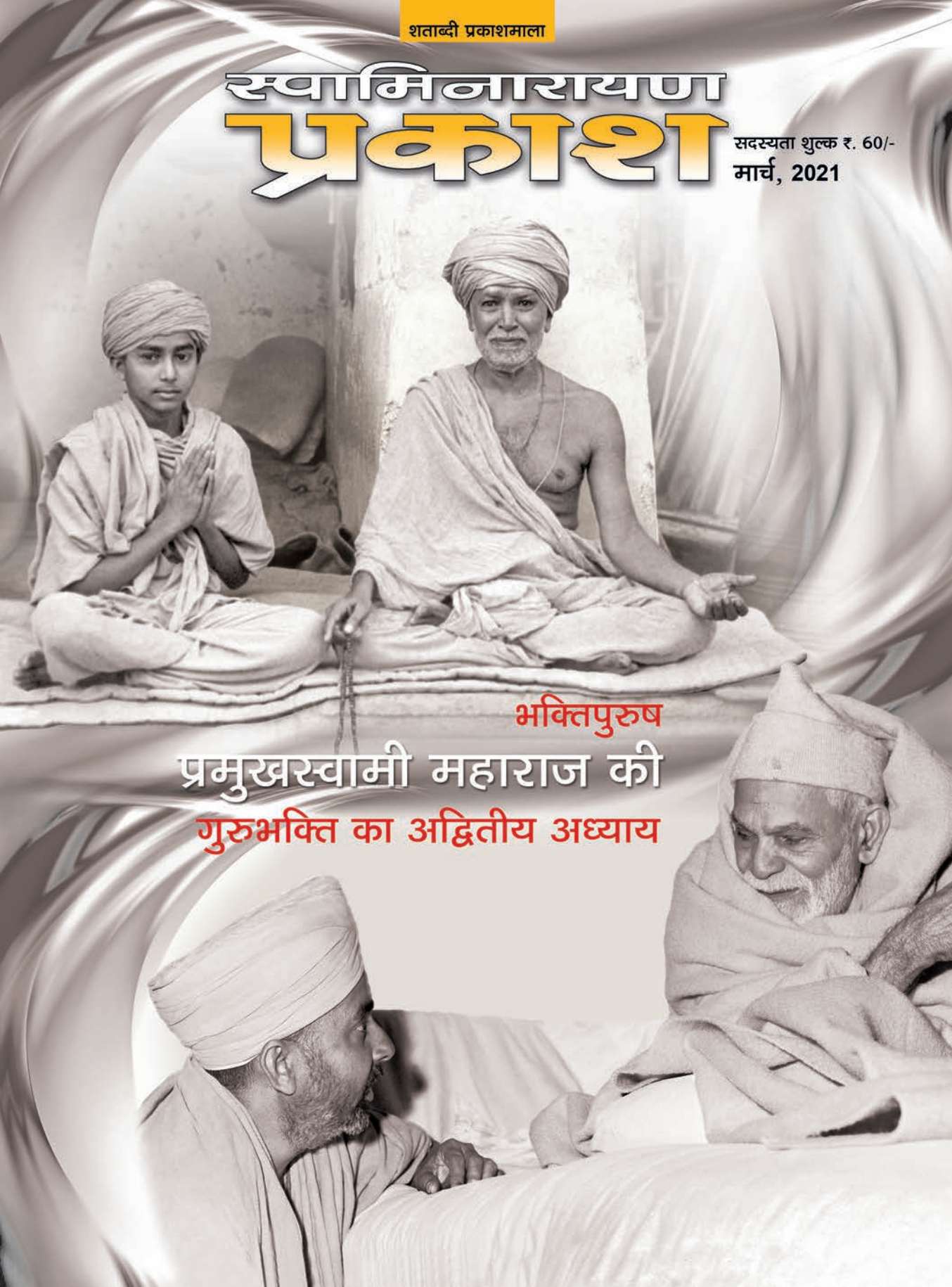

भक्तिपुरुष
प्रमुखस्वामी महाराज की
गुरुभक्ति का अद्वितीय अध्याय

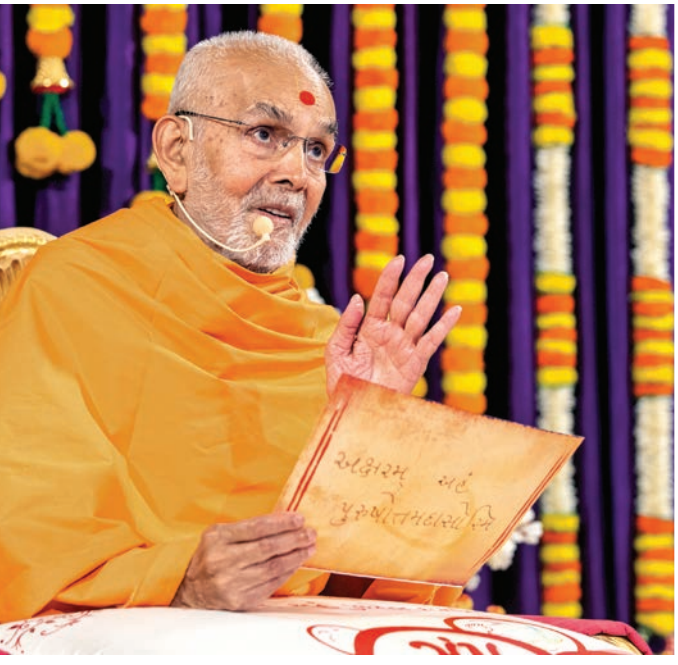

सत्संग दीक्षा ग्रंथ की प्रथम जयंती पर विश्वशांति महायज्ञ

सत्संगदीक्षा ग्रंथ के लेखन का आरम्भ किया गया, उसे वसंतपंचमी पर ठीक एक वर्ष पूर्ण हुआ, इसलिए उसकी प्रथम जयंती पर नेनपुर में बिराजमान ग्रंथ के रचयता महंत स्वामी महाराज ने सत्संग दीक्षा का होमात्मक पाठ तथा यज्ञ करके परब्रह्म भगवान श्रीस्वामिनारायण, अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी तथा सभी गुरुवर्यों को अर्घ्य अर्पण किया। (16 फरवरी, 2021)

गुरु बिन ज्ञान न ऊपजै...

गुरुभक्त ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज की गुरुभक्ति को वंदना...

गुरु-शिष्य परम्परा भारतीय संस्कृति की एक शाश्वत आधारशीला है। संस्कृति की चेतना को टिकाए रखनेवाले एक दुर्लभ परिबल, जो उपनिषदों के समय से लेकर आज तक समग्र विश्व को प्रेरणा प्रदान करता रहा है।

इस गुरु-शिष्य परम्परा का एक आदर्श उदाहरण थे - ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज। स्वामिनारायण प्रकाश की शताब्दी प्रकाशमाला का यह अंक प्रमुखस्वामी महाराज की अद्वितीय गुरुभक्ति को समर्पित है।

गुरु-शिष्य परम्परा भारतीय अध्यात्म की रीढ़ की हड्डी है। प्रसिद्ध ब्रिटिश लेखक श्री पीटर ब्रेन्टे ने 'skeleton of Hinduism' के रूप में गुरु-शिष्य परम्परा का अनोखा महत्व अंकित किया है।

रीढ़ की हड्डी अथवा अस्थिपींजर के बिना शरीर किस प्रकार से स्थिर और सुरक्षित रह सकता है? गुरु-शिष्य परम्परा के बिना समाज की भी ऐसी ही हालत कही जा सकती है। जिन्हें आध्यात्मिक मार्ग पर प्रगति करनी है, उन्हें ऐसे गुरु की शरण में जाने के अलावा और कोई रास्ता नहीं। इसीलिए कठोपनिषद आदेशात्मक स्वर में हमें सम्बोधित करके कहती है -

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया
दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति॥

'त्रिकालज्ञानी कविगण आध्यात्मिक मार्ग को उस्तरे की धार के समान दुर्गम बताते हैं। इसलिए हे मनुष्य! उठो, जागो, सावधान हो जाओ और श्रेष्ठ महापुरुष को प्राप्त करके उनके पास जाकर परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करो।' (1/3/14)

मुंडक उपनिषद पुन: उसका उच्चारण करती है -

तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्।
समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्म निष्ठम्।

'वे विज्ञान अर्थात् ब्रह्म-परब्रह्म का विशेष ज्ञान प्राप्त करने के लिए श्रोत्रिय, ब्रह्मस्वरूप तथा परमात्मा में दृढ़निष्ठ गुरु के पास हाथ में समिध (अर्घ्य) लेकर जाएँ।' (1/2/12)

परब्रह्म भगवान श्रीस्वामिनारायण श्रीहरिचरित्रसागर में गुरु की शरण में जाने का महत्व बतलाते हुए कहते हैं - 'गाढ़े जंगल में बिना मार्गदर्शक के किसी अनजान को रास्ता नहीं मिलता, उसी प्रकार से पंडित भी शास्त्र के विभिन्न शब्दों को समझे बिना नास्तिक हो जाते हैं।'

महासिंधु को पार करना हो, तो आप अपने बल पर नहीं तैर सकते। पंखवाला प्राणी भी पार नहीं हो सकता, परन्तु सिद्ध गति प्राप्त कर चुके सागर को लांघकर जाते हैं। सिद्ध गुरु नाव के समान होता है। गुरुरूपी नाव में बैठकर वह समुद्र पार करता है। (15/3/29-33)

'ककहरा लिखा हो और दोनों आँखों से देखने के बावजूद कहनेवाले गुरु यदि न हों, तो अक्षरज्ञान नहीं होता। सत्पुरुष की संगत के बिना ज्ञान, अंधा व्यक्ति स्वयं मार्ग प्राप्त करने के लिए कोशिश करे, उसी प्रकार से है। यदि दीपक लेकर भी कुएँ में गिर पड़े तो सच्चा गुरु ज्ञान का नेत्र खोल देता है। आँखें भी हो, सूर्य का प्रकाश भी हो, फिर भी नेत्र की ज्योति न हो तो कुछ भी दिखाई नहीं देता। गुरु ज्ञान की ज्योति प्रकट करके देता है।' (13/58/33-36)

इसीलिए कबीरजी अपनी दोहावलि में गुरु की अपार महिमा का वर्णन करते हैं -

गुरु बिन ज्ञान न ऊपजै,
गुरु बिन मिले न मोक्ष।
गुरु बिन लखै न सत्य को,
गुरु बिन मिटै न दोष॥
गुरु बिन माला फेरते,
गुरु बिन देते दान।
गुरु बिन सब निष्फल गया,
पूछौ वेद पुरान॥

ऐसे गुरु की शरण में जाकर उनकी आज्ञा में रहकर, उनकी प्रसन्नता प्राप्त करके शिष्य धन्यता का अनुभव करता है। कृतार्थता प्राप्त करने का आनन्द प्राप्त करता है। ऐसी धन्यता का बयान करते हुए तुलसीदासजी गुरु की वंदना करते हैं -

बंदऊँ गुरुपद पंकज
कृपासिन्धु नररूप हरि।
महामोह तमपुंज
जासु बचन रविकर निकर॥
गुरु बिन भवनिधि तरइ न कोई,
जो बिरंचि शंकरसम होई...

'इसलिए जो कृपा के सागर हैं। सूरज की किरणों के समान जिनके वचनों से महामोह का गहरा अंधकार नष्ट हो जाता

है, ऐसे मनुष्य रूप में साक्षात् परमात्मा के समान गुरुदेव के चरणकमल में वंदन करता हूँ। ऐसे गुरु के बिना भवसागर कोई नहीं पार कर सकता। भवब्रह्मा जैसे समर्थ हों, तो भी नहीं!'

गुरु के ऐसे महत्व का आंकलन करते हुए आपस्तंब धर्मसूत्र तो **'पुत्रमिवैनमभिकांक्षन्'** कहकर गुरु और शिष्य के बीच का सम्बंध पिता और पुत्र जैसा सम्बंध प्रकट करते हैं। (1,2,8)

गुरु का ऐसा अपार महत्व होते हुए भी आधुनिकता की हवा ऐसी पवित्र गुरुभक्ति को व्यक्तिपूजा में खपा देती है। 'चाहे जितनी ही सिद्धियाँ प्राप्त की हो, तो भी गुरु के चरणों में यदि मन को समर्पित नहीं किया, तो जीवन में क्या किया? **गुरोरंघ्रिपद्मे मनश्चेत् न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किम्॥'** इस प्रश्न को पूछनेवाले प्रकाण्ड विद्वान श्रीमद् आदि शंकराचार्य भी ऐसी व्यक्तिपूजा में विश्वास रखते थे। भगवान श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण, भगवान श्रीस्वामिनारायण से लेकर स्वामी विवेकानंद सभी ने ऐसी व्यक्तिपूजा में विश्वास किया था। व्यक्तिपूजा की छाया में नास्तिकता अथवा तर्क, वितर्क, कुतर्क के भ्रम में डूबकर जिन्होंने एक सच्चे गुरु की शरण लेकर शिष्य के रूप में ऐसे गुरु के छत्र का लाभ लिया ही नहीं वे अत्यन्त ही दयनीय है, परन्तु इस विश्व का सौभाग्य है कि प्रत्येक युग में ऐसे आदर्श गुरु और आदर्श शिष्य का यहाँ पर जन्म होता रहा है, जिन्होंने कलियुग के विपरीत वातावरण में भी गुरु-शिष्य परम्परा को उज्ज्वल बनाए रखा है। आधुनिक युग में ऐसे यशस्वी शिष्य के चरित्र को टांकना हो, तो ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज का नाम गौरव के साथ लिया जा सकता है। वे असंख्य भक्तों के प्राणप्यारे आदर्श गुरुहरि थे, तो दूसरी तरफ एक आदर्श गुरुभक्त भी थे। गुरु शास्त्रीजी महाराज तथा गुरु योगीजी महाराज ही उनके जीवन की धड़कन थे।

सन् 1939 में उनकी उम्र 18 वर्ष की थी। उन्हें गुरु शास्त्रीजी महाराज की चिट्ठी मिलते ही तुरन्त वे माता-पिता की आज्ञा लेकर शास्त्रीजी महाराज के चरणों में समर्पित हो गए। एक क्षण का भी विलम्ब नहीं!

शास्त्रीजी महाराज ने उन्हें अंग्रेजी पढ़ने के लिए कहा, इसलिए वे तैयार हो गए और शास्त्रीजी महाराज ने अंग्रेजी के बजाए संस्कृत पढ़ने के लिए कहा, तो उसी क्षण अंग्रेजी का लक्ष्य त्यागकर संस्कृत के अध्ययन में शामिल हो गए। संस्कृत का अध्ययन पूर्ण होने के बजाए शास्त्रीजी महाराज ने उन्हें मंदिर के निर्माण में शामिल कर लिया। उसमें शरीर की परवाह किए बिना चूना मिलाने की सेवा में शामिल हो गए। उसके अतिरिक्त शास्त्रीजी महाराज ने उन्हें कोठार की सेवा में शामिल किया, तो उसमें शामिल हो गए। उस सेवा के बजाए जब पुनः संस्कृत पढ़ने की आज्ञा दी, तो पुनः संस्कृत पढ़ने लगे। वह अध्ययन भी अधूरा रखकर शास्त्रीजी महाराज ने उन्हें संस्था का प्रमुख नियुक्त किया और उसी के साथ संस्था की प्रशासनिक जिम्मेदारी भी सौंप दी, तो उसमें प्राणों की आहुति दे दी। बी.ए.पी.एस. संस्था के प्रमुख के रूप में उनके पास कोई व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा न थी। गुरु की महिमा बढ़े, यही उनका संकल्प था। गुरु शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज के संकल्पों को पूर्ण करना ही उनका लक्ष्य और उसके लिए जीवन के अंतिम श्वास तक परिश्रम करते रहे। गुरु को दिया गया वचन जीवनभर पालते रहे। गुरु की महिमागाथा निरन्तर गाते रहे और सबकुछ करने के पश्चात् अपने जीवन के सभी कार्यों तथा सभी सिद्धियों का यश गुरु के चरणों में समर्पित कर दिया। उनकी गुरुभक्ति की चरमसीमा उस समय अनुभव की गई, जब उनके शरीर की राख हो जाए, तो भी उस पर गुरु की निरन्तर दृष्टि पड़ती रहे ऐसी अभिलाषा रखकर अपने अंतिम संस्कार का स्थल भी उन्होंने निश्चित कर दिया। उसी अभिलाषा के साथ उन्होंने अंतिम श्वास लिया। ऐसे आदर्श गुरुभक्त प्रमुखस्वामी महाराज की गुरुभक्ति की स्मृतियों के साथ 'शताब्दी प्रकाश माला' का यह अंक आपके हाथ में रखते हुए अत्यन्त ही आनन्द का अनुभव होता है। ◆

॥ श्री स्वामिनारायणो विजयते ॥

गुणातीतोऽक्षरं ब्रह्म भगवान् पुरुषोत्तमः।
जनो जानन्निदं सत्यं, मुच्यते भवबन्धनात्॥

स्वामिनारायण प्रकाश

वर्ष : 39, अंक : 3, मार्च, 2021

संस्थापक : ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज
सम्पादक : साधु स्वयंप्रकाशदास
प्रकाशक : स्वामिनारायण अक्षरपीठ, शाहीबाग, अहमदाबाद – 380004.
यह पत्रिका प्रतिमास 10 दिनांक को प्रकाशित होती है।
शुल्क : वार्षिक सदस्यता शुल्क : रू. 60/– यह पत्रिका नियमित रूप से डाक द्वारा प्राप्त करने के लिए शुल्क मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट 'स्वामिनारायण अक्षरपीठ' के पक्ष में प्रकाशक के पते पर भेजें। किसी भी मास में सदस्य बन सकते हैं।

सम्पादन विषयक पत्रव्यवहार :
prakash@in.baps.org
'प्रकाश–पत्रिका' संपादन कार्यालय,
स्वामिनारायण अक्षरपीठ, अहमदाबाद – 380004.

सदस्यता विषयक पत्रव्यवहारः
magazines@in.baps.org
'प्रकाश–पत्रिका' सदस्यता कार्यालय,
स्वामिनारायण अक्षरपीठ, अहमदाबाद – 380004.

website :
www.baps.org • magazines.baps.org

और बंदर ठठाकर हँसने लगा...

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज सामान्य शैली तथा सरल शब्दों में इस प्रकार से उपदेश-गंगा प्रवाहित करते थे कि जिसमें सहजता से सभी को ज्ञान मिलता था। यहाँ प्रस्तुत है उनकी एक प्रासादिक बोधकथा - सिंह और बंदर की बोधकथा। वे इस प्रकार से प्रस्तुत करते कि सभी को हँसी आ जाती थी। स्वामीश्री की शताब्दी के पर्व पर शताब्दी प्रकाश माला में उनकी बोधकथा और बोधवार्ता को इस विभाग में आनन्द लेते रहेंगे।

एक जंगल में सिंह रहता था। उसको कुछ खाने को नहीं मिला, इसलिए भूख को मिटाने के लिए शिकार की खोज में घूमते हुए उसने एक पेड़ पर दूर से ही बंदर को देखा। सिंह ने मन में विचार किया कि वैसे तो इस बंदर का शिकार होगा नहीं, इसलिए उसके मन में एक युक्ति आई। वह स्वयं महात्मा बन गया। जमीन पर फूंक मारकर वह धीमे-धीमे चलने लगा।

बंदर ने वृक्ष पर बैठे-बैठे उसे देखा। वह सोचने लगा कि 'यह सिंह जैसा हिंसक प्राणी और इस प्रकार से फूंक मारकर जमीन पर चलता है!' उसे बहुत नया लगा। अनेक प्रकार के विचार उसके मन में उठने लगे। वह इस प्रकार विचार करता है, तभी सिंह उसके नजदीक आ पहुँचा। बंदर ने उसे पूछा, 'आप तो जंगल के राजा कहलाते हैं और आप इस प्रकार जमीन पर फूंक मारकर पैर रखते हैं, उसका कारण क्या है?'

सिंह ने जवाब दिया कि 'सुनो, मैं यात्रा पर गया हुआ था। वहाँ के पवित्र स्थानों का दर्शन किया, वहाँ का वातावरण देखा। सभी लोग कुछ न कुछ नियम ले रहे थे। मैंने भी वहाँ पर विचार किया कि मैं भी कोई नियम लूँ। बाद में एक बड़े महात्मा थे। मैं उनके पास गया और वर्तमान ले लिया। नियम लिया कि किसी भी प्राणीमात्र की हिंसा नहीं करूँगा। चींटी जैसे जीव की भी हिंसा नहीं करनी है। अत: चींटी आदि मर न जाएँ, इसीलिए मैं इस प्रकार जमीन पर फूंक मारकर चलता हूँ!'

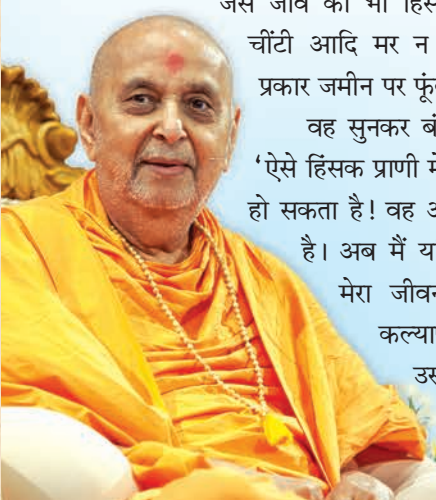

वह सुनकर बंदर ने विचार किया कि 'ऐसे हिंसक प्राणी में भी इस प्रकार परिवर्तन हो सकता है! वह अवश्य महात्मा बन गया है। अब मैं यदि उसके पाँव लगूँ, तो मेरा जीवन धन्य हो जाए और कल्याण हो जाए।' इस प्रकार उसने सिंह की बात में विश्वास कर लिया।

बाद में वह बंदर पेड़ से नीचे उतरकर सिंह के पास आया। सिंह को चाहे जैसे भी बंदर को पकड़ना था, इसलिए उसने वह ढोंग रचाया था। बंदर ने पास आकर सिर झुकाया तब सिंह ने बंदर को दबोच लिया। बंदर सिंह की चाल समझ गया, परन्तु वह भी बुद्धिमान था। इसलिए सिंह ने उसे दबोचकर पकड़ लिया था, फिर भी वह खिलखिलाकर हँसने लगा।

अब सिंह सोचने लगा, 'इसके मरने का समय आ गया है, फिर भी यह बंदर हँसता क्यों है?'

सिंह ने उसे पूछा, 'तुम हँसते क्यों हो?' बंदर ने कहा, 'तुम मुझे छोड़ दो तो मैं आनन्दपूर्वक उसका वर्णन करूँ।' उस रहस्य को जानने के लिए सिंह ने उसे छोड़ दिया। उसके साथ ही जिस प्रकार से बंदूक से गोली छूटती है, उसी प्रकार से छूटने के साथ ही बंदर छलांग लगाकर पेड़ पर चढ़ गया और रोने लगा। उसे देखकर सिंह ने रोने का कारण पूछा तो बंदर ने कहा, 'महात्मा अथवा गुरु का ढोंग बनाकर तुम मेरे जैसे हजारों विश्वासी के प्राण निकाल लोगे, इस पर मुझे रोना आ रहा है।'

इतना कहने के बाद बंदर चल दिया।

उसी प्रकार से इस संसार में धर्म के नाम पर धोखा देनेवाले ऐसे न जाने कितने महात्मा और गुरु होते हैं। दुकानों में बाहर से बहुत सा डेकोरेशन देखने को मिलता है, परन्तु अंदर जाइए तो पता चलता है कि भाव क्या है और माल कैसा है! उसमें भी सोना लेने जाइए और बाद में उसके बदले में पीतल आ जाए तो रोना ही होता है। हमारे शास्त्रों ने हमें दीपक जैसी साफ बात बताई है। सच्चे संत की पहचान बताई है, इसलिए सच्चे संत के लक्षण देखकर उसकी शरण में जाएँ। गलत मार्ग पर भ्रमित न हों। ◆

शताब्दी अनुभूति

प्रमुखस्वामी महाराज : आदर्श भक्त और आदर्श शिष्य

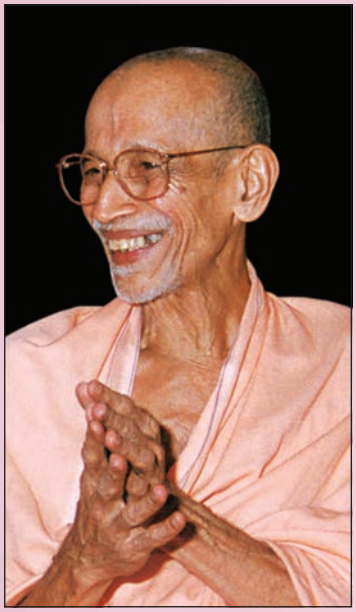

स्वामी श्री चिदानंद सरस्वतीजी
(पूर्वाध्यक्ष, दिव्यजीवन संघ, ऋषिकेश)

प्रमुखस्वामी महाराज पवित्रता, शांति, प्रेम तथा गुरुकृपा के मूर्तिमान स्वरूप हैं। मुझे उन अत्यन्त ही कृपालु आध्यात्मिक, तेजस्वी संत के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क का अत्यन्त ही सुखद अवसर प्राप्त हुआ है। पूज्य स्वामीजी अपने तेजस्वी जीवन-आदर्श के द्वारा तथा प्रेमपूर्ण उपदेश के द्वारा लाखों मुमुक्षुओं तथा अनुयायियों को ऐसे धर्ममय आध्यात्मिक जीवन की तरफ ले जाते हैं, जिसमें मानवजाति का आत्यंतिक श्रेय रहता है।

पूज्य महाराज अत्यन्त ही आदरणीय संत हैं। उनका व्यक्तिगत जीवन तथा दैनिक व्यवहार, साधु संन्यासियों के लिए अनुकरणीय और एक ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत करता है। आज से 200 वर्ष पूर्व उत्पन्न हुए उस विश्व प्रसिद्ध नैतिक और आध्यात्मिक सम्प्रदाय के अध्यक्ष होते हुए भी प्रमुखस्वामीजी में सदैव अत्यन्त ही सादगी आचरण की विनम्रता तथा अहंशून्यता का दर्शन होता है। उनका ऐसा दर्शन सौन्दर्यपूर्ण है और ऐसा दर्शन मुझे अत्यन्त ही आनंदित करता है।

पूज्य स्वामीजी के कंधे पर कितनी कठिन जिम्मेदारियाँ हैं! इतना होने पर भी वे कितने हलके-फूलके लगते हैं! उसका कारण है कि सर्वोपरि श्री भगवान स्वामिनारायण के प्रति वे अनन्य शरणागति रखते हैं और भगवान की दिव्य कृपा से प्राप्त हुई सेवा में निष्ठापूर्वक स्वयं को मात्र 'निमित्त रूप' (Merely an Instrument) ही मानते हैं।

प्रमुखस्वामी महाराज को सदैव उनके इष्टदेव के साथ देखने और देवों के लिए भी दुर्लभ दृश्य है - उनके इष्टदेव से वे कभी अलग होते ही नहीं और सभी महत्वपूर्ण अवसरों पर मंच पर अथवा व्यासपीठ पर अथवा कहीं भी बिराजमान हों, वहाँ इष्टदेव (ठाकुरजी की मूर्ति) को वे अग्र स्थान पर रखते हैं। स्वामीजी के सान्निध्य में सदैव इष्टदेव को ही अग्रता प्रदान की जाती है।

समाज में बढ़ती हुई आक्रामक नास्तिकता के इस युग में परमपूज्य प्रमुखस्वामी महाराज अपने नीतिमत्तापूर्ण आदर्श जीवन का दिव्य प्रकाश फैलाते हैं और आज के मानवजात को आचरण की सज्जनता, भगवन्मयता एवं पूर्ण जीवन का उजाला फैलाते हैं।

उनके चारों ओर साधुता-सुहृदयता एवं विश्व प्रेम का प्रकाशपुंज दिखाई देता है। आप जिस समय उनके सान्निध्य में और उनके समीप में आएँ, तो आपको निश्चित रूप से वह अनुभव होता है। हम सभी

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज एवं स्वामी श्री चिदानंदजी महाराज की आध्यात्मिक गोष्ठि की एक स्मृतिछवि। (1987, ऋषिकेश)

भगवान श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में पहचानते हैं, परन्तु प्रमुखस्वामीजी में हमारे समय के मर्यादापुरुष का दर्शन होता है। उनमें एक आदर्श साधु का दर्शन होता है। समग्र विश्व में जिनके लाखों शिष्य और अनुयायी हों, उनके वे एक आदर्श गुरु भी हैं। वर्तमान मानवजाति के एक आदर्श आध्यात्मिक मार्गदर्शक हैं। उनमें एक आदर्श भक्त का ज्वलंत उदाहरण देखने को मिलता है। उसके साथ ही उनकी महान गुरुपरम्परा में एक आदर्श शिष्य के रूप में भी वे उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

वे आज के आध्यात्मिक भारत के एक प्रेरक आध्यात्मिक अग्रणी हैं, एक कुशल समर्थ आयोजक हैं, उसके बावजूद उनके अंदर विनय, शिष्टाचार तथा संस्कारिकता की आत्मा देखने को मिली है। उनके व्यवहार में संवेदनशील सौजन्य का दर्शन होता है। मेरे जीवन में जिनके साथ साथ मिलने का मुझे अवसर एवं सौभाग्य मिला, उसका अत्यन्त ही आनन्द मैंने पाया। ऐसी सम्भावना पूर्ण विभूतियों में से वे एक हैं।

स्वामीजी अपने सम्पर्क में आनेवाले प्रत्येक व्यक्ति के साथ ऐसा स्नेहपूर्ण सम्बंध स्थापित कर लेते हैं। ऐसा उनके व्यक्तित्व का ये महत्वपूर्ण पहलू है। उसका स्रोत उनके सहज स्वभाव में से उनकी जन्मसिद्ध सज्जनता और साधुता से तथा अखण्ड दिव्यता में से प्रवाहित हो रही है। एक फूल में सहज प्राकृतिक सुगंध होती है, उसी प्रकार से उनमें है।

इस प्रकार पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज को असाधारण सादगी लिए हुए और आध्यात्मिकता की उदात्त एवं उन्नत ऊँचाई को छूने वाले व्यक्ति के रूप में मैं उन्हें देखता हूँ और उन्हें जानता हूँ। आधुनिक युग को ऐसे अनेक व्यक्तियों की जरूरत है। जब मैं उनके विषय में विचार करता हूँ, तो मुझे गौरांग महाप्रभु के प्रसिद्ध शब्द याद आ जाते हैं – 'अमानिना मानदेन' जिसका अर्थ यह है कि अन्य की तरफ से मान की अपेक्षा नहीं रखने के बावजूद अन्य को मान प्रदान करने के अत्यन्त ही आग्रही।' हमारे शास्त्रों में भगवान विष्णु को ऐसा उदात्त सात्विक गुरु से शोभायमान वर्णन किया गया है।

वे भगवान के परम भक्त हैं, एक महान संत हैं, एक आदर्श पुरुष हैं और सज्जनता एवं धर्म की प्रतिमूर्ति हैं। सबकुछ एक ही साथ है।

उनका तेजस्वी व्यक्तित्व और जगमगाता हुआ आध्यात्मिक जीवन भारत तथा विश्व में मानव कल्याण एवं नैतिक उत्थान का साधन बन चुका है। ◆

गुरुभक्तिः
जीवन की सार्थकता का राजमार्ग

■ साधु आत्मतृप्तदास

उपनिषद के महान गुरुभक्त सत्यकाम जाबालि से लेकर ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज तथा आधुनिक समय के भारत में गुरुभक्ति की प्रेरणा दे रहे अनेक महान चरित्र इतिहास के पृष्ठों पर जगमगा रहे हैं। गुरुभक्ति भारतीय अध्यात्म की रगरग में धड़कती रहती है, परन्तु गुरुभक्ति किसलिए? आध्यात्मिक साधना में उसका क्या महत्व है? आदि की व्याख्या करते हुए यह विस्तृत लेख आपको गुरुभक्ति की एक सही दिशा का मार्गदर्शन करता है।

जन्म के साथ ही मनुष्य का जीवन प्रारम्भ होता है और मृत्यु के साथ जीवनयात्रा की समाप्ति होती है। समग्र जीवनयात्रा की सफलता अथवा निष्फलता का मापदण्ड जीवन के अंत में साथ में क्या रहता है, उसी के आधार पर निश्चित किया जाता है। जीवन में सबकुछ कर लेने के पश्चात भी यदि सार्थकता का अनुभव न हो सके, तो जीवन के दौरान चाहे कितनी भी सिद्धियाँ प्राप्त की हों, वे सभी निरर्थक हैं। इस सार्थकता तक पहुँचने के लिए ही ब्रह्मविद्या और उसके लिए जीवन में एक सच्चे गुरु की जरूरत होती है, जो हमारी उंगली पकड़कर हमें परमपद तक पहुँचा सके।

'अध्यात्म विद्या विद्यानाम्'[1] कहकर भगवान श्रीकृष्ण ने अध्यात्मज्ञान को परमात्मा की विभूति के रूप में समग्र विद्याओं में सर्वोच्च स्थान दिया हुआ है। अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी ने कहा है कि 'पढ़ने जैसी तो ब्रह्मविद्या है।'[2] क्योंकि यह विद्या जीवन को सार्थक बनाती है। इस श्रेष्ठ विद्या की प्राप्ति के लिए मंदिर तथा तीर्थस्थान पाठशाला की भूमिका अदा करते हैं। शास्त्र पाठ्यपुस्तकों की कमी पूरी करते हैं। गुरु शिक्षक का दायित्व निभाते हैं।

लौकिक विद्या में पाठशाला और पुस्तकालय चाहे जितने ही अच्छे हों, फिर भी शिक्षक का महत्व विशेष रूप से होता है। उसी प्रकार से अध्यात्म विद्या की प्राप्ति के साधनों में गुरु का स्थान सर्वोच्च स्तर पर है।

श्रीमद्भागवत में तीर्थ और प्रतिमा से भी अधिक गुरु का स्थान बतलाया गया है।[3] भगवान श्रीस्वामिनारायण ने शास्त्र की मर्यादा भी बतलाकर गुरु के द्वारा ही परमात्मा के स्वरूप का ज्ञान[4] तथा एकान्तिक धर्म की सिद्धि[5] होती है, ऐसा समझाया गया है। गुरु की अनिवार्यता का यह सिद्धान्त सनातन धर्म के शास्त्रों में हर प्रकार की साधना के निष्कर्ष के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

मुंडक उपनिषद में ब्रह्मविद्या की व्याख्या करके उसकी प्राप्ति का एक मात्र उपाय बतलाते हुए कहा गया है – **'तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्'**[6] अर्थात् उस ब्रह्मविद्या की प्राप्ति के लिए गुरु के पास ही जाना चाहिए। यहाँ पर 'एव' के प्रयोग द्वारा ब्रह्मविद्या के लिए गुरु के पास जाना ही पड़ेगा और

---

1 श्रीमद्भगवदगीता – 10/32

2 अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी की बातें – 2/38

3 न ह्यम्मयानि तीर्थानि न देवा मृच्छिलामयाः।
ते पुनन्त्युरुकालेन दर्शनादेव साधवः॥
(श्रीमद्भागवतपुराणम् – १०/८४/११)

4 और, भगवत्स्वरूप सम्बंधी ऐसी वार्ता तो शास्त्रों से भी अपने-आप समझ में नहीं आती। और, सद्ग्रन्थों में ऐसी वार्ता तो होती है, परन्तु जब सत्पुरुष प्रकट होते हैं तभी उनके मुख द्वारा यह बात समझ में आती है। लेकिन अपनी बुद्धि के आधार पर तो सद्ग्रन्थों में से भी यह बात समझ में नहीं आती। (वचनामृत गढडा मध्य प्रकरण-13)

5 इस प्रकार का जो एकान्तिक धर्म है, वह ऐसा निर्वासनिक पुरुष हो, तथा जिसने भगवान में अपनी स्थिति बना रखी हो, उसके वचनों से ही सुलभ हो जाता है। केवल ग्रन्थों में लिखे हुए वचनों से वह एकान्तिक धर्म प्राप्त नहीं होता।

6 मुण्डोकोपनिषद् – १/२/१२

गुरु के पास ही जाना पड़े ऐसे दो अर्थ उपनिषद में स्थित हैं।[7]

श्रीमद्भागवत के 11वें स्कंध में राजाजनक तथा 9 योगेश्वर के संवाद में 'भागवत धर्म' शब्द से अध्यात्मविद्या को प्रस्तुत किया गया है। वहाँ भी इस धर्म की प्राप्ति के लिए उत्तम कल्याण को प्राप्त करने के लिए गुरु की शरणागति बतलाते हुए कहा गया है, **'तस्माद् गुरु प्रपद्येत जिज्ञासुः श्रेय उत्तमम्'**[8] अर्थात् 'उत्तम श्रेय को जानने की इच्छा हो, तो उसे गुरु की शरण में जाना चाहिए।'

गुरु परमात्मा तक पहुँचानेवाले शेतु है, इसीलिए स्वयं भगवान भी अपनी प्रत्यक्ष उपस्थिति हो, तो भी गुरु की सेवा का ही उपदेश देते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को ज्ञानी और तत्वदर्शी गुरु की सेवा करने को कहा है।[9] उसी प्रकार से श्रीमद्भागवत में तृतीय स्कंध में भगवान कपिलदेव अपनी माता को संत के साथ आत्मबुद्धि करने का उपदेश देते हैं।[10] पंचम स्कंध में ऋषभदेव भगवान अपने पुत्रों को महान गुरु की सेवा करके मोक्ष प्राप्त करने का उपदेश देते हैं।[11] परब्रह्म भगवान श्रीस्वामिनारायण ने वचनामृत में अपने समक्ष बैठे हुए संतों-भक्तों को परमात्मा की भक्ति प्राप्त करने के लिए संत की सेवा और सत्संग करने को कहा है।[12]

गुरु की अनिवार्यता किसलिए

सामान्य तौर पर गुरु शब्द का अर्थ मार्गदर्शक के रूप में लिया जाता है। क्या करें? कैसे करें? किसलिए करें? इत्यादि उपदेश के वचनों को गुरु कहें और शिष्य को साधना के मार्ग की स्पष्टता हो जाए, इतनी ही गुरु की भूमिका रहती है, कुछ लोग इतना ही मानते हैं। इसके लिए कईबार ऐसी समझ भी उत्पन्न होती है कि शास्त्रों में से, ग्रंथों में से अथवा पूर्व में हो चुके या वर्तमानकाल में मौजूदा विद्वानों के प्रवचनों में से अच्छी-अच्छी बातें सुनने से मार्गदर्शन मिलता है। शुभ प्रेरणा भी प्राप्त होती है। इसलिए गुरु की शरण स्वीकार करने की जरूरत नहीं। गुरु के साथ बँधने के बजाए मुक्त रूप से आध्यात्मिक साधना का अनुसरण करना अधिक अच्छा है। ऐसी भी मान्यता देखने को मिलती है। इस मान्यता में गलत गुरु के साथ फँस जाने का भय रहता है। इस दृष्टि से गुरु रहित जीवन जीने की तरफ बहुत से लोग प्रेरित होते हैं। जिसके परिणामस्वरूप अयोग्य गुरु की संगत से रक्षा होती है यह बात सही है, परन्तु सच्चे गुरु को प्राप्त करके जीवन सार्थक बनाने का लक्ष्य शेष ही रह जाता है। जिस प्रकार से नकली गुरु के प्रति अंधविश्वास नुकसानप्रद है, उसी प्रकार से सच्चे गुरु के प्रति अविश्वास नुकसानकर्ता है। इसी प्रकार से सच्चे गुरु के प्रति अविश्वास भी पूर्णता से वंचित कर देता है; क्योंकि गुरु का स्थान साधक के जीवन में एक मार्गदर्शक से भी अधिक विशेष है, जो दूसरा कोई नहीं निभा सकता। ऐसी भूमिका गुरु अपने शिष्य के जीवन में निभाता है।

गुरु - शास्त्र के रहस्य को उजागर करनेवाला तथा श्रद्धा प्रकट करनेवाला

शास्त्रों में वर्णित सिद्धान्त को स्पष्ट करने के लिए अनुभवी पुरुष का आधार लेना जरूरी है। केवल शब्दकोष अथवा व्याकरण का आधार लेकर शास्त्र को नहीं समझा जा सकता। उसमें भी परस्पर विरोधाभास की प्रतिध्वनि आती रहती है। ऐसे समय में एक गुरु ही उस रहस्य को खोलकर परेशानी दूर कर सकता है। वचनामृत शास्त्र में भगवान स्वामिनारायण के स्वरूप के विषय में अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी ने वडताल में स्पष्ट कर दिया था। उस समय उस उपदेश का लेखन करनेवाले शुकानंद स्वामी भी आश्चर्यमिश्रित आनन्द का अनुभव करने लगे। उन्होंने कहा था, 'वचनामृत को श्रीहरि ने मुझे लक्ष्य बनाकर कहा है, परन्तु उसका यथार्थ तो आज ही मुझे समझ में आया।'[13]

शास्त्र में प्रतिपादित पारलौकिक सत्य में श्रद्धा भी प्रकट गुरु के दर्शन से ही उत्पन्न होती है। गुरु की उपस्थिति अंतर्मन में आध्यात्मिक चेतना प्रकट करती है। विश्व प्रसिद्ध मैनेजमेन्ट इन्स्टीट्यूट IIM अहमदाबाद, उदयपुर तथा शिलोंग में अध्यापन की सेवा कर रहे प्रो. गोकुल कामथ को दक्षिण भारत में बैंग्लोर के पास एक आश्रम में बिराजमान पूज्य श्री विराजेश्वर स्वामी के सत्संग में श्रद्धा उत्पन्न हुई थी। उन्होंने गुरु के रूप में उन्हें स्वीकार करके जीवन में प्रगति की थी, परन्तु सन् 2014 में गुरु के अवसान के बाद वे आध्यात्मिक रिक्तता का अनुभव करने लगे। अनेक स्थानों में उस रिक्तता को भरने

7 एवकारश्च नैकार्थज्ञापकः। प्रथमं ब्रह्मविद्याप्राप्त्यर्थं गुरूपसत्तौ नियमविधिं ज्ञापायति ब्रह्मविद्याभीप्सा चेद् गुरुरवश्यमाश्रयणीय इति। अन्ययोगव्यवच्छेदार्थ्वीकारे ब्रह्मविद्यार्थं गुरुरेवाश्रयणीयो नाऽन्यः कोऽपीति। (मुण्डकोपनिषत्स्वामिनारायणभाष्यम् - १/२/१२)

8 श्रीमद्भागवतपुराणम् - ११/३/२१

9 तद् विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः॥ (श्रीमद्भगवद्गीता-४/३४)

10 श्रीमद्भागवतपुराणम् (३/२५/२०)

11 महत्सेवां द्वारामाहुर्विमुक्तेस्तमोद्वारं योषितां सङ्गिसङ्गम्।
महान्तस्ते समचित्ताः प्रशान्ता विमन्यवः सुहृदः साधवो ये॥
(श्रीमदभागवतपुराणम् - ५/५/२)

12 वचनामृत गढडा अंत्य प्रकरण-5

13 हर्षदराय त्रिभुवनदास दवे, 'अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी जीवन चरित्र भाग-1', स्वामिनारायण अक्षरपीठ, ग्यारहवाँ संस्करण-जनवरी 2018, पृ. 375

के लिए उन्होंने प्रयत्न किया, उसके बाद सन् 2018 में एक विद्यार्थी द्वारा उन्हें गोधरा में परमपूज्य महंत स्वामी महाराज की प्रात:पूजा में दर्शन करने का सुयोग प्राप्त हुआ। उस प्रसंग की अनुभूति का वर्णन करते हुए वह कहते हैं, 'I was really worried about my prigress on the spiritual path. My guru left his body in 2014. The influence of maya and absence of my guru meant that I was slowly losing grip on spirituality. I was in fear that I might waste my life. After my guru's death I visited many respected sages before meeting with Mahant Swami Maharaj. They all are respecteds, but I didn't find the spark of God realization in them. And I was feeling completely lost even while going for darshan of Mahant Swami Maharaj. I didn't have much hope. But, when Swamiji's car entered the premise my eyesight met his. For tht fraction of time, I saw the clear, direct and compassionate answer. Here, I am' and that was an electrifying thing. In that glance I felt an ocean of compassion. Regardless of what you are or your background, I found my answer in his eyes; 'My blessings are with you, just don't worry.'

In pooja darshan, Swamiji was completely immersed in God. For forty-five minutes tears were coming from my eyes continuously. My previous births' sins which were bothering me... obstacles in my spiritual progrss, I felt cleansing was happening. After that moment my spiritual journey started moving. He is at the level of God. God who walks through him.''[14] ''अर्थात् आध्यात्मिक मार्ग में अपनी प्रगति के लिए मैं वास्तव में चिंतित था। मेरे गुरु ने सन् 2014 में शरीर त्याग कर दिया। माया के प्रभाव तथा मेरे गुरु की बिदाई के कारण धीरे-धीरे मैं अपनी आध्यात्मिकता खोने लगा। मुझे यह भय था कि मेरा जीवन बर्बाद हो जाएगा। मेरे गुरु के निर्वाण के पश्चात महंत स्वामी महाराज से मिलने के पहले मैं बहुत से आदरणीय संतों से मिला था। वे सभी आदरणीय थे, परन्तु मुझे उनमें भगवान की अनुभूति का प्रकाश दिखाई न दिया। जब मैं महंत स्वामी महाराज के दर्शन के लिए जा रहा था, उस समय पूरी तरह से असमंजस में डूबा हुआ था। मुझे वहाँ भी कोई विशेष आशा न थी, लेकिन जब स्वामीजी की कार परिसर में प्रवेश की, तो मेरी आँखें उनकी आँखों से मिली। क्षणभर में मैंने उनकी आँखों में स्पष्ट, सरल और करुणापूर्ण प्रत्युत्तर देखा - 'तुम जिस उत्तर की खोज करते हो, वह तो यहीं मेरे पास है।' वह एक ऊर्जाप्रेरक अनुभूति थी। उस दृष्टि में मुझे करुणा के महासागर का अनुभव हुआ। मैं चाहे जहाँ रहूँ, मेरी पृष्ठभूमि चाहे जैसी हो, उससे निरपेक्ष ऐसा उत्तर मुझे उनकी आँखों में दिखाई दिया - 'मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है, तुम चिंता मत करो।''

'पूजा के दौरान स्वामीश्री पूर्ण रूप से भगवान में निमग्न हो गए थे, परन्तु वास्तव में भगवान के अस्तित्व से उनका अस्तित्व अलग था ही नहीं। दोनों अलग-अलग थे ही नहीं। लगातार 45 मिनट तक मेरी आँखों में से आँसू बहते रहे। मेरे पूर्वजन्म के पापों का बोझ, लगता था कि उतर गया है! मेरी आध्यात्मिक प्रगति के बीच आनेवाले आवरण हट गए थे। मुझे ऐसा लगता था कि मेरा शुद्धिकरण हो रहा है। उसी क्षण से मेरी आध्यात्मिक यात्रा आगे बढ़ने लगी। वे तो भगवान की कक्षा पर बिराजमान हैं। उनके द्वारा भगवान स्वयं विचरण कर रहे हैं।'

जहाँ पर बौद्धिक तीक्ष्णता और शास्त्रीय ज्ञान आध्यात्मिक प्रगति के मार्ग में कम पड़ता है, वहाँ प्रकट गुरु का सान्निध्य मात्र श्रद्धा उत्पन्न करता है, उसका यह उदाहरण है।

गुरु अर्थात् अपने आचरण से शास्त्र का अर्थ समझानेवाला आचार्य

शास्त्रों में लिखे गए सिद्धान्तों को देखकर श्रेष्ठ मूल्यों का शब्दचित्र तो प्राप्त होता ही है, परन्तु इस सिद्धान्त को आचरण में किस प्रकार से और किस स्वरूप में लाया जा सकता है, इसे समझने के लिए गुरु का जीवन एक उदाहरण स्वरूप बन जाता है। उसके अतिरिक्त यह केवल पोथी की बात ही नहीं, बल्कि मनुष्य शरीर से इस प्रकार जी सकते हैं, ऐसी श्रद्धा भी गुरु के जीवन से प्राप्त होती है। गुरु के जीवन के समक्ष देखते हुए शास्त्र का अर्थ उद्घाटित होता है। उदाहरण के रूप में वचनामृत में भगवान को सर्वकर्ता मानने का उपदेश बलपूर्वक दिया गया है।[15] परन्तु जिस समय प्रमुखस्वामी महाराज के जीवन के समक्ष दृष्टि की जाती है, तो भगवान का कर्तापन मानना अर्थात् उससे क्या स्पष्ट होता है, उसका अनुभव हरकोई कर सकता है। जिस समय सृष्टि का आश्चर्यजनक वैभव दिखाई देता है अथवा किसी व्यक्ति की अद्भुत प्रतिभा नजर के सामने आती है, तो प्रमुखस्वामी महाराज की वाणी और उनके विचारों में भगवान की ही वह सर्जनशक्ति है - वह महिमा प्रकट होती है। जिस समय कोई कार्य सम्पन्न करना हो, उस समय प्रार्थना रूप में

14 महंत स्वामी महाराज के विचरण का अहेवाल - 17-9-2020

15 वचनामृत कारियाणी प्रकरण-10, गढडा मध्य प्रकरण-21

भगवान के कर्तापन के प्रति उनकी श्रद्धा का दर्शन होता है। जिस समय सफलता अथवा सम्मान मिलता है, तो उस समय 'मैंने कुछ भी नहीं किया। सबकुछ भगवान और गुरु के प्रताप से हुआ है।' – ऐसी प्रतिध्वनि उनके अंतर से निकलती है। जिस समय निष्फलता, दु:ख अथवा अपमान का अवसर आता है, उस समय, 'जो होता है, वह भगवान की इच्छा से और अपनी भलाई के लिए ही होता है।' – ऐसी प्रतीति उनकी प्रतिभा में मिली हुई होती है। जिस समय किसी व्यक्ति की तरफ से उन्हें कुछ सहन करने का प्रसंग उपस्थित हो, उस समय भी ''बैठाया जाए, तो भी कोई किसी का सुधार नहीं करता और न तो बिगाड़ता ही है। प्रत्येक व्यक्ति में रहकर भगवान ही हमारी परीक्षा लेते हैं।'' ऐसी समझ उनके जीवन में देखने को मिलती है।

इस प्रकार शास्त्र में वर्णन किए गए भगवान के कर्तापन के सिद्धान्त को आचरण में उतारना अर्थात् उसका समग्र चित्र प्रमुखस्वामी महाराज के जीवन में ही प्राप्त होता है। इसलिए शास्त्र को यथार्थ रूप से समझने के लिए और आचरण में उतारने के लिए गुरु के जीवन की तरफ देखना पड़ता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवतजी प्रमुखस्वामी महाराज के विषय में अपनी अनुभूति का वर्णन करते हुए कहते हैं, 'मैंने शास्त्र का पठन नहीं किया है, परन्तु जीवन का शास्त्र प्रमुखस्वामी महाराज के रूप में अपनी आँखों से देखा है। प्रमुखस्वामी महाराज से मैं जब भी मिला हूँ, उस समय इसका प्रत्यक्ष अनुभव हुआ है।'[16]

शास्त्र के सिद्धान्त गुरु द्वारा जीए जाने से गुरु जीवन्त शास्त्र के समान हैं और इसीलिए मुमुक्षु के लिए किसी भी ग्रंथ से अधिक बन जाते हैं। इसलिए गुजरात के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री बाबुभाई जशभाई पटेल प्रमुखस्वामी महाराज को शिक्षापत्री का मूर्तिमान स्वरूप कहते थे और पूज्य डोंगरेजी महाराज, योगीजी महाराज को 'भगवत्स्वरूप संत' कहते थे।[17] शास्त्र का अध्ययन करनेवाले अथवा न करनेवाले दोनों के लिए प्रत्यक्ष गुरु का जीवन में क्या महत्व है, इस बात को इसी आधार पर समझा जा सकता है।

'मुझ पर हुए प्रमुखस्वामी महाराज के प्रभाव का निष्कर्ष मैं किस तरह से समझाऊँ? उन्होंने मेरा सम्पूर्ण परिवर्तन किया है। वे मेरे आध्यात्मिक आरोहण की पराकाष्ठा हैं। प्रमुखस्वामीजी ने मुझे परमेश्वर के समक्ष ऐसी श्रमण कक्षा में रखा है कि मुझे अब कुछ भी करना शेष नहीं।'

- डॉ. अब्दुल कलाम

गुरु - जीवन का रूपान्तरण करनेवाला

जीवन को सार्थक बनानेवाले मूल्यों के प्रति जानकारी प्राप्त करना एक अलग बात है और उन मूल्यों को आचरण में समाहित करना वह दूसरी बात है। जीवन उत्कर्ष के मार्ग पर आगे बढ़ने का प्रयत्न करनेवाला प्रत्येक साधक किसी न किसी समय ऐसा अनुभव अवश्य करता है कि वह स्वयं द्वारा समझे गए, विचारे गए अथवा स्वीकारे गए सिद्धान्तों को भी जब जीवन में उतारने की बात आए, तो अपनी ताकत कम महसूस होती है। व्यसन से क्या नुकसान होता है, इस बात को अच्छी तरह से समझनेवाला और उससे मुक्त होने की इच्छा रखनेवाला भी कभी-भी व्यसन से नहीं छूट पाता। क्रोध करने का परिणाम अंत में पश्चात्ताप करना होता है। उसे जानने के बाद और अनुभव करने के बाद भी लोग क्रोध का त्याग नहीं कर पाते। यह कई लोगों का अनुभव है। ऐसे समय पर गुरु के साथ सम्बंध रखना एक चमत्कार का सर्जन होता है। जिसे बहुत कुछ जानकर भी प्रयत्न करने के बाद सम्भव नहीं होता, वह तो गुरु की कृपादृष्टि से सहज ही में हो जाता है। एक साधनाशील संत उपेन्द्रानंद स्वामी को जो भी काम दोष के संकल्प थे, वे सभी अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी की एक दृष्टि से ही शांत हो गए।[18] स्वामिनारायण सम्प्रदाय के वडताल संस्थान के प्रथम आचार्य श्री रघुवीरजी महाराज के हृदय में जो कुण्ठा रह गई थी, वह भी गुणातीतानंद स्वामी के संक्षिप्त सत्संग में पूर्ण रूप से नष्ट हो गई थी।[19]

भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का समग्र जीवन उच्च स्तर की जिम्मेदारियों के बीच भी आध्यात्मिक साधनामय रहा है। वे जीवनपर्यंत जहाँ से भी जो कुछ अच्छा मिला, उसे ग्रहण करके अपने आचरण में उतारते रहे और एक प्रामाणिक प्रयत्न किए थे। वे ऐसे श्रेष्ठ जीवन जीनेवाले महानुभाव थे, जिन्होंने हर किसी को प्रेरणा प्रदान की

16 स्वामिनारायण प्रकाश – नवम्बर 2016, पृ. 36

17 साधु ईश्वरचरणदास, ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज जीवन चरित्र भाग-4, स्वामिनारायण अक्षरपीठ, तीसरा संस्करण – जून 2010, पृ. 261

18 हर्षदराय त्रिभुवनदास दवे, ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज स्वामीश्री यज्ञपुरुषदासजी जीवन चरित्र भाग-1, स्वामिनारायण अक्षरपीठ, नौवां संस्करण – जुलाई 2014, पृ. 139

19 हर्षदराय त्रिभुवनदास दवे, 'अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी जीवन चरित्र', स्वामिनारायण अक्षरपीठ, ग्यारहवां संस्करण – जनवरी 2018, भाग-1, पृ. 402; भाग-2, पृ. 106

थी। उनके आंतरिक रूपांतरण में गुरु के प्रताप का ही अनुभव हुआ था। प्रमुखस्वामी महाराज के साथ अपनी आध्यात्मिक अनुभूतियों का वर्णन करते हुए वे लिखते हैं –

'How do I summarize Pramukh Swamiji's effect on me? He has indeed trasformded me. He is the ultimage stage of the spiritual ascent in my life, which started with my father, was sustained by Dr. Brahma Prakash and Prof. Satish Dhawan; now, finally, Pramukh Swamiji has put me in a God-synchronous orbit. No manoeuvres are required any more, as I am placed in my final position in eternity.'[20] अर्थात् 'मुझ पर हो चुके प्रमुखस्वामी महाराज के प्रभाव का निष्कर्ष मैं कैसे समझाऊँ? उन्होंने मेरे सम्पूर्ण जीवन का परिवर्तन किया है। वे मेरे आध्यात्मिक आरोहण की पराकाष्ठा है। जिस आरोहण का प्रारम्भ मेरे पिताश्री ने कराया था, डॉ. ब्रह्मप्रकाश तथा प्रो. सतीश धवन ने जिसका पोषण किया था और अंत में अब प्रमुखस्वामीजी ने मुझे परमेश्वर की उस भ्रमण कक्षा में रखा है कि अब मुझे कुछ भी करना शेष नहीं; क्योंकि मैं अनंतता के अपने अंतिम मुकाम पर पहुँच चुका हूँ।'

इस प्रकार गुरु की भूमिका केवल मार्गदर्शक के रूप में ही नहीं, बल्कि परम सत्य में श्रद्धा प्रकट करके अपने आचरण से प्रेरणा प्रदान करके अंततः अपनी आध्यात्मिक शक्ति से ही शिष्य को श्रेष्ठ कक्षा पर पहुँचाना है। यह गुणातीत गुरु के बिना दूसरा कौन कर सकता है और ऐसे गुरु का ऋण कौन अदा कर सकता है?

परब्रह्म भगवान श्रीस्वामिनारायण के उपदेशों में गुरुभक्ति का उपदेश

भगवान श्रीस्वामिनारायण ने मुमुक्षुओं के श्रेय के लिए अपने वचनामृत में जो भी सर्वकालीन उपदेश दिया है, उसमें किसी भी आध्यात्मिक उपलब्धि को आत्मसात् करने के लिए आवश्यक रूप से गुरु के साथ जुड़ने का मार्ग दिखलाया है। वचनामृत का अध्ययन करने पर यह निश्चित रूप से समझ में आता है कि गुरु की सेवा किए बिना इस मार्ग में कुछ भी नहीं किया जा सकता। कभी परम एकान्तिक साधु[21] शब्द से, तो कईबार सत्पुरुष[22] शब्द से और कभी-कभी बड़ा साधु[23] शब्द से तो कभी-कभी गुरुरूप हरि[24] शब्द से अक्षरब्रह्म गुरु को प्रस्तुत करके उन्होंने प्रत्यक्ष गुरु में जुड़ी हुई भक्ति को ही समग्र साधना की सिद्धि के लिए मुख्य उपाय बतलाया है।

वचनामृत में अनेक स्थानों पर कभी प्रश्न के उत्तर के रूप में तो कभी कृपा वाक्य के रूप में उन्होंने संत की सेवा करने का ही उपदेश दिया है। निर्विकल्प समाधि जैसी शांति प्राप्त करने के लिए,[25] पूर्व के विकृत संस्कारों और प्रारब्ध के दुःख में से मुक्त होने के लिए[26] अयोग्य स्वभाव में से मुक्त होने के लिए[27] भगवान में दृढ़ प्रीति अथवा स्नेह बढ़ाने के लिए[28] एकान्तिक धर्म की सिद्धि के लिए[29] मोक्ष के लिए[30] आत्मस्वरूप स्थिति प्राप्त करने के लिए[31] कृतार्थपन का अनुभव करने के लिए[32] अथवा आत्मा-परमात्मा का साक्षात्कार करने के लिए[33] संत की सेवा, संत में प्रेम, संत की आज्ञा का पालन, संत की महिमा अथवा संत की प्रसन्नता बतलाई गई है। इतना ही नहीं, अक्षरब्रह्म गुरु भगवान के साथ सेवा करने के लायक हैं,[34] गुरु की भगवान की भाँति भगवान के साथ थाल, मानसी आदि समान सेवा[35] करें, गुरु में भगवान की भाँति प्रेम रखें[36] संत का भगवान की भाँति आश्रय लें[37] संत का भगवान की भाँति माहात्म्य सहित निश्चय करें,[38] उनके दर्शन को भगवान के दर्शन समान समझें[39] उनकी सेवा से भगवान की सेवा करने का फल मिले और उनके द्रोह से भगवान का द्रोह करने का पाप लगेगा[40] आदि वचनों द्वारा स्वयं भगवान श्रीस्वामिनारायण ने गुरु की भक्ति करने का उपदेश दिया है।

---

20 Dr. A.P.J. Abdul Kalam with Arun Tiwari, Transcendence, HarperCollins Publisher, 2015, Pg. 50.

21 वचनामृत वरताल प्रकरण-3

22 वचनामृत वरताल प्रकरण-11

23 वचनामृत गढडा अंत्य प्रकरण-38

24 वचनामृत गढडा अंत्य प्रकरण-2

25 वचनामृत गढडा अंत्य प्रकरण-11

26 वचनामृत गढडा प्रथम प्रकरण-58, गढडा मध्य प्रकरण-45

27 वचनामृत गढडा मध्य प्रकरण-7

28 वचनामृत गढडा प्रथम प्रकरण-44, गढडा मध्य प्रकरण-29, गढडा अंत्य प्रकरण-5

29 वचनामृत गढडा प्रथम प्रकरण-60

30 वचनामृत गढडा प्रथम प्रकरण-54, गढडा प्रथम प्रकरण-78, वरताल प्रकरण-4

31 वचनामृत गढडा मध्य प्रकरण-51

32 वचनामृत गढडा मध्य प्रकरण-59

33 वचनामृत वरताल प्रकरण-11

34 वचनामृत गढडा अंत्य प्रकरण-26

35 वचनामृत वरताल प्रकरण-5

36 वचनामृत गढडा अंत्य प्रकरण-29

37 वचनामृत वरताल प्रकरण-10

38 वचनामृत लोया प्रकरण-3

39 वचनामृत सारंगपुर प्रकरण-10, गढडा प्रथम प्रकरण-37

40 वचनामृत गढडा अंत्य प्रकरण-35

गुरुभक्ति से क्या परमात्मा की गौणता होती है?

आध्यात्मिक मार्ग पर चल पड़े प्रत्येक साधक का अंतिम लक्ष्य परमात्मा के परम आनन्द की अनुभूति है। उससे परम उपास्य स्वरूप परमात्मा स्वयं हैं। उन्हीं की उपासना और पराभक्ति करनी है। जिस समय वे स्वयं परमात्मा की आज्ञानुसार अपनी यथार्थ उपासना कराने के लिए गुरु की शरण में जाएँ। गुरु की महिमा समझकर गुरुभक्ति की जाए, तो भगवान के बिना अन्य की भक्ति होने से भगवान की अनन्य भक्ति में बाधा उत्पन्न होती है; क्योंकि उससे परमात्मा की गौणता होती है, उससे परब्रह्म के स्वरूप का द्रोह कहा जाएगा। – ऐसा संदेह उपस्थित होने की सम्भावना रहती है, परन्तु जिस समय सही अर्थ में सच्चे गुरु की भक्ति की जाती है, उस समय ज्यों-ज्यों गुरु की भक्ति करें, त्यों-त्यों परमात्मा के प्रति प्रेम और महिमा में वृद्धि होती है। अंततः गुरु में ही उन्हें परमात्मा के प्रत्यक्षपन का अनुभव होता है।

सच्चे गुरु की विशेषता यह है कि उनमें भगवान जैसा ऐश्वर्य होते हुए भी भगवान के ही वचन का अनुसरण करके उनके शिष्य उनमें भगवान जैसा भाव रखने के बावजूद वे हमेशा भगवान का दास बनकर रहते हैं। गुणातीत गुरु परम्परा में सभी लोगों ने प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया है कि वे क्षणमात्र भी भगवान के प्रति अपनी दासत्व भक्ति से विचलित नहीं होते। ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज में सभी लोगों को असीमित सामर्थ्य का अनुभव हुआ था। जिस प्रकार से भगवान स्वामिनारायण के सम्बंध से हजारों लोगों को समाधि हो जाती थी, उसी प्रकार से शास्त्रीजी महाराज के आशीर्वाद से भी समाधि होती थी। हजारों भक्त उन्हें भगवान का स्वरूप मानकर आदर प्रदान करते थे, परन्तु शास्त्रीजी महाराज सदैव स्वयं को अक्षरपुरुषोत्तम का 'बैल' मानते थे। उसी में वे अपना गौरव समझते थे। कोई प्रेमी हरिभक्त महिमापूर्वक उनके चरणारविंद की छाप माँगता तो 'मेरा पाँव काटकर ले जाओ'[41] इस प्रकार की उपेक्षा करके भगवान स्वामिनारायण के ही चरणारविंद का पूजन करने के लिए कहते थे।

ऐसे साक्षात ब्रह्मस्वरूप गुरु की महिमा समझनेवाले को भगवान श्रीस्वामिनारायण की महिमा विशेष रूप से समझ में आती है। जिसका दास इतना समर्थ हो, तो उसके स्वामी कितने समर्थ होंगे! इस प्रकार से परमेश्वर के प्रति उनकी उपासना अधिक दृढ़ होती है।

इसीलिए भगवान श्रीस्वामिनारायण प्रबोधित 'अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन' में सर्व के कारण आधार तथा प्रेरक ऐसे अक्षरब्रह्म गुरुहरि की महिमा समझकर उनके साथ एकता स्थापित करके उस अक्षरब्रह्म के भी कारण आधार तथा प्रेरक परब्रह्म की स्वामी-सेवक भाव से उपासना की जाती है।[42]

प्रमुखस्वामी महाराज की गुरुभक्ति आनेवाली अनेक पीढ़ियों के लिए मशाल बनी रहेगी। उन्होंने अपने गुरु के स्मरण मात्र से किसी अनोखे भावप्रदेश में विचरण करते हुए सभी ने अनेकबार अनुभव किया है। ऐसे समय पर गुरु के प्रति उनके अलौकिक प्रेम में गुरुभक्ति के विभिन्न रंगों का दर्शन होता रहता है।

26 अक्टूबर, 2017 को परमपूज्य महंत स्वामी महाराज ने गांधीनगर में अपने आशीर्वचन में कहा था, 'सच्चा गुरु अपने शिष्य को स्वयं में जोड़ता ही नहीं। स्वयं जोड़े उसे संत नहीं कहा जाता। संत सभी को भगवान में ही जोड़ते हैं। दासभाव का आचरण रखते हैं। भगवान में अधिक से अधिक जुड़ जाए, ऐसा वे प्रयत्न करते हैं। श्रीजीमहाराज को प्राप्त करना हो, उनकी भक्ति करनी हो, तो संत के साथ जुड़ जाएँ। निःशंक होकर सत्पुरुष में जुड़ जाएँ।'[43]

गुरुभक्ति का स्वरूप

गुरुभक्ति अर्थात् शिष्य का गुरु के साथ सम्बद्ध हो जाना। गुरु के साथ ऐसा जुड़ाव ही शिष्य के लिए आध्यात्मिक मार्ग की जीवनडोर है। वह जुड़ाव शिष्य को पार कर देता है। भगवान स्वामिनारायण ने वचनामृत में परब्रह्म का अखण्ड साक्षात्कार प्राप्त किए हुए संत की महिमा बतलाते हुए कहा है कि 'जिसको ऐसी समझ आ न सके, तो जिसे समझ प्राप्त हुई है, ऐसे सन्त की संगत में अपना जीवन न्योच्छावर करे, और वह सन्त यदि उसे नित्य पाँचबार जूतियों से प्रताड़ित करें, तो भी वह इस अपमान को सहन करता हुआ सन्त के संग को छोड़ न सके, जैसे अफ़ीम का व्यसनी अफ़ीम को नहीं छोड़ सकता, वैसे ही वह भी किसी भी तरह से सन्त का सत्संग नहीं छोड़ सकता ऐसी समझवाले को पूर्वोक्त सन्त के समान ही मानना। और, जैसी प्राप्ति उन महान सन्त को होती है, वैसी ही प्राप्ति इस (शरणागत) को होती है, जो सन्त-समागम में पड़ा रहता है।'[44]

अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी ने एक उदाहरण देते हुए

41 यज्ञपुरुष स्मृतिग्रंथ, श्री अक्षरपुरुषोत्तम अर्थात् श्री स्वामिनारायण संस्था – बोचासण की तरफ से ब्रह्मस्वरूप स्वामीश्री यज्ञपुरुषदास शताब्दी स्मारक ग्रंथ समिति, संवत 2021 वसंतपंचमी, पृ. 160

42 वचनामृत गढडा मध्य प्रकरण-3

43 महंत स्वामी महाराज विचरण अहेवाल, दि. 26-10-2017

44 वचनामृत सारंगपुर प्रकरण-10

कहा है कि गरुड़ की पंख में मच्छर बैठ जाए तो वह भी गरुड़ की गति को प्राप्त कर लेता है। उसी प्रकार से गुरु के साथ जुड़ जाने से गुरु जैसी ही प्राप्ति होती है।[45]

गुरु के साथ ऐसा जुड़ाव किस स्वरूप में अभिव्यक्त होता है, उसे संकलित रूप में समझने का प्रयत्न करें।

गुरु के साथ प्रेम

प्रेम का भाव जीव प्राणीमात्र में स्थित एक सहज स्वभाव है। अपने स्वजनों के प्रति प्रेम जीवनभर परिवार अथवा स्नेहीजनों के साथ जोड़ रखता है। उससे जीवन में एक प्रकार की सांत्वना का अनुभव होता है। यद्यपि अत्यधिक स्नेह बंधन और जन्म-मरण का कारण बन जाता है। जिसे श्रीमद्‌भागवत में भरतजी ने मृगशिशु में हुए स्नेह के आख्यान से समझाया गया है।[46] परन्तु वह स्नेह जिस समय गुरु के साथ होता है, तो जीवन को कृतार्थता से भर देता है।[47]

गुरु के प्रति प्रेम के कारण गुरु का दर्शन, उनकी वाणी, उनका सांन्निध्य सब कुछ अच्छा लगने लगता है। गुरु की सेवा और गुरु का महिमागान करने की एक उमंग रहती है। गुरु का सम्बंध रखनेवाले भक्तों के प्रति भी आत्मीयता प्रकट होती है। प्रेम की यह सहज प्रक्रिया भी आध्यात्मिक मार्ग में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

गुणातीत गुरु परम्परा में अपने गुरु के प्रति वैसा ही छलकता हुआ अनन्य प्रेम देखने को मिलता है। अपने प्रियतम का स्मरण होते ही व्यक्ति भावविभोर बन जाता है। उसी प्रकार से प्रमुखस्वामी महाराज तथा महंत स्वामी महाराज भी अपने गुरु के स्मरण मात्र से एक अनोखे भावप्रदेश में विचरण करने लगते हैं। इसे सभी लोगों ने अनेकबार अनुभव किया है। ऐसे समय में गुरु के प्रति उनके अलौकिक प्रेम में गुरुभक्ति के विभिन्न रंगों का दर्शन होता रहता है।

गुरु की आज्ञा - रुचि का पालन

गुरु में जुड़ने का सही ढंग समझाते हुए गुणातीतानंद स्वामी ने कहा है, 'जो आज्ञा में रहता है वह कदाचित् दूर रहता है, तो भी हमारी चारपाई के पास है। जो आज्ञा नहीं पालता, वह पास में है तो भी दूर है। चाहे जैसा ज्ञानी हो, स्नेहवाला हो, महान हो, परन्तु आज्ञा का उल्लंघन करे, तो सत्संग में नहीं रह सकता। इस पर उदाहरण दिया कि पतंग उड़ाने से दूर गई है, परंतु डोरी हाथ में है, तो वह समीप ही है। इसी तरह आज्ञारूपी डोरी हाथ में है, तो महाराज के पास ही हैं।'[48]

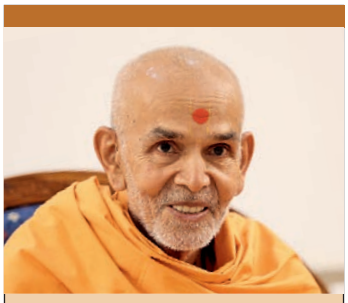

'सच्चा गुरु अपने शिष्य को स्वयं में जोड़ता ही नहीं। स्वयं जोड़े उसे संत नहीं कहा जाता। संत सभी को भगवान में ही जोड़ते हैं। दासभाव का आचरण रखते हैं। सभी भगवान में अधिक से अधिक जुड़ जाए, ऐसा वे प्रयत्न करते हैं। श्रीजीमहाराज को प्राप्त करना हो, उनकी भक्ति करनी हो, तो संत के साथ जुड़ जाएँ। निःशंक होकर सत्पुरुष में जुड़ जाएँ।'

- महंत स्वामी महाराज

ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज की साधना में ऐसी गुरुभक्ति एक-एक प्रसंग में प्रस्फूटित होती मालूम पड़ती है। इसीलिए उनके लिए ऐसा कहा जाता था कि जिस प्रकार से गुणातीतानंद स्वामी की जीभ ज्यों ही मुड़ी उसी के साथ भगतजी का शरीर गतिशील हो जाता था। गुणातीतानंद स्वामी अगर कुछ कहते भी थे, तो उसे उसी रुचि समझकर भगतजी महाराज उसका अनुसरण करते थे। उसे देखकर स्वामी कहने लगते, 'तुम मेरे अंतर्यामी हुए हो।'[49]

गुरु की मर्जी में होम हो जाने की ऐसी गुरुभक्ति के सामने अन्य सभी साधन फीके पड़ जाते हैं। गुणातीतानंद स्वामी ने अपने उपदेश में कहा है कि संत जैसा कहें वैसा करो, तो वही श्रेष्ठ है, निर्गुण है, विघ्नरहित है और चाहे जितनी भी साधना हो, सेवा करने के बावजूद यदि मन कहे तो कनिष्ठ है, सगुण है और विघ्नयुक्त है।[50]

सद्‌गुरु मुक्तानंद स्वामी भी गुरुवचन की महिमा समझाते हुए कहते हैं - 'हे मन! गुरुदेव का वचन ग्रहण करके अपना स्वरूप शुद्ध आत्मरूप है उसे पहचान ले। अपने ढंग से कोटि साधन करेगा लेकिन सद्‌गुरु के बिना इसका फल नहीं मिलेगा।'[51]

ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज ऐसी गुरुभक्ति का फल अपने अनुभवों से बतलाते हुए कहते थे, 'शास्त्रीजी महाराज के ही मन का निश्चित किया हुआ मैंने किया है, परन्तु अपने मन का मैंने नहीं किया। इसलिए स्वामी बहुत प्रसन्न हैं और इस समय दर्शन देते हैं, जिससे बड़ा आनन्द आता है।'[52]

45 अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी की बातें - 3/31
46 श्रीमद्‌भागवतपुराणम् - 5/7,8
47 वचनामृत गढडा मध्य प्रकरण-59
48 अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी की बातें - 5/151
49 ब्रह्मस्वरूप श्री प्रागजी भक्त जीवन चरित्र, पृ. 57
50 अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी की बातें - 2/57
51 कीर्तन मुक्तावलि भाग-1, पृ. 64
52 ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज जीवन चरित्र भाग-3, पृ. 216

(शेषांश पृष्ठ 33 पर)

मोहे लागी लगन गुरुचरनन की...

वैदिककाल से भारतीय संस्कृति में प्रवाहित हो रहे गुरु-शिष्य परम्परा के एक आदर्श उदाहरण थे - ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज। गुरुवचन ही प्रमुखस्वामी महाराज के जीवन की धड़कन। गुरु की इच्छा ही उनकी साधना की धड़कन। स्वयं लाखों लोगों के प्राणप्यारे महान गुरुदेव होते हुए भी जीवनभर एक आदर्श गुरुभक्त के रूप में जीवनवाले प्रमुखस्वामी महाराज की गुरुभक्ति की स्मृतियाँ यहाँ प्रस्तुत हैं -

■ साधु आदर्शजीवनदास

8 दिसम्बर, 1986 को दक्षिणी अफ्रीका के जोहान्सबर्ग युनिवर्सिटी के विज्ञान के प्राध्यापक श्री ब्रायन हचिंन्सन ने ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज से पूछा कि 'आपकी आध्यात्मिक प्रगति किस प्रकार से हुई?'

'गुरु की सेवा, दृष्टि तथा आशीर्वाद' स्वामीश्री ने रहस्य बतलाते हुए कहा।

●

12 मार्च सन् 1986 को प्रमुखस्वामी महाराज की मुलाकात पर आए हुए 'गुजरात समाचार' दैनिक के पत्रकार ने भी पूछा, 'स्वामीजी! आपके जीवन में आनन्द की अनुभूति कैसे प्राप्त हुई है?'

'गुरु की सेवा मिली और सच्चे गुरु मिले यही आनन्द है' स्वामीश्री ने कहा।

●

9 अगस्त, 2012 की रात्रि में पत्रों को पढ़ रहे प्रमुखस्वामी महाराज के समक्ष संतों ने अहोभाव व्यक्ति किया कि 'स्वामी! आपने जितने पत्रों को लिखा है, यदि उसे इकट्ठा किया जाए तो बहुत बड़ी लाइब्रेरी भर जाए। इतना तो कोई नहीं लिख सकता।'

'शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की प्रेरणा' स्वामीश्री ने सहजतापूर्वक कहा।

●

10 जनवरी, 2012 को प्रात:काल में भोजन ग्रहण कर रहे प्रमुखस्वामी महाराज से संतों ने पूछा, 'बापा! आपका प्रिय ग्रंथ कौन सा है?'

'भक्तचिंतामणि' इतना कहकर स्वामीश्री ने कहा, 'गुरु शास्त्रीजी महाराज सदैव उसे पढ़वाते रहे।'

●

15 जुलाई, 2012 को सायंकाल में अहमदाबाद में रविवारीय सभा से अपने निवास पर पधारते हुए स्वामीश्री से संतों ने पूछा, 'बापा! आपके बहुत से नाम हैं। जैसे पूर्वाश्रम का नाम शांतिलाल। उसके बाद साधु होने के बाद नारायणस्वरूपदास नाम पड़ा। उसके अलावा प्रमुखस्वामी महाराज, स्वामीबापा, स्वामीश्री इन सब नामों से भी आपको सभी लोग सम्बोधित करते हैं। उसके अतिरिक्त शास्त्रीय ढंग से तो आप अक्षरब्रह्म हैं। भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. कलाम आपको महाप्रमुखजी कहते हैं। इन सभी में से आपको कौन सा नाम अधिक प्रिय है?'

'गुरु शास्त्रीजी महाराज ने जो दिया है वही' स्वामीश्री ने कहा।

●

13 अगस्त, सन् 1986 की रात्रि में अहमदाबाद में चल रही एक सरस प्रश्नोत्तरी में स्वामीश्री से प्रश्न पूछा गया कि 'आपको कौन सी ऋतु पसन्द है?'

'वसंत।'

'किसलिए?'

'गुरु शास्त्रीजी महाराज इस ऋतु में प्रकट हुए थे, इसलिए।' स्वामीश्री ने कहा।

●

13 नवम्बर, सन् 2013 को देव प्रबोधिनी एकादशी पर स्वामीश्री का दीक्षा दिवस भी था। उस दिन प्रासंगिक बातों के दौरान संतों ने कहा, 'स्वामी! आपके गुरु शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज को आप कभी नहीं भूलते।'

'वे तो भूलते ही नहीं' स्वामीश्री का ऐसा प्रतिभाव तुरन्त ही प्रस्तुत हुआ।

●

इस प्रकार के सैकड़ों नहीं, हजारों प्रसंगों को यहाँ पर प्रस्तुत किया जा सकता है। एक-एक प्रसंग में समझा जा सकता है कि प्रमुखस्वामी महाराज का जीवन के केन्द्र थे - उनके प्राणप्यारे गुरु शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज। सफलता की प्राप्ति कहिए अथवा विश्व का कीर्तिमान और उसकी प्रेरणा कहिए। मनपसंद ऋतु की बात हो अथवा मनपसंद ग्रंथ की बात हो, प्रत्येक में स्वामीश्री के प्रेरक बल तथा पसंद किए गए स्तर में गुरु ही मुख्य रहते थे। एकबार उन्होंने कहा था, 'हमारा जन्म ही गुरु को प्रसन्न करने के लिए हुआ है।'

उसी ध्येय को अपना चुके प्रमुखस्वामी महाराज ने गुरु को प्रसन्न करने के लिए अपने शरीर को भी पूरी तरह से भूला दिया।

सन् 1967 में जब वे योगीजी महाराज के साथ डेमोल गाँव पधारे थे, तो उस समय उनका शरीर बुखार के कारण टूट रहा था। सिर दर्द कर रहा था। उसके अलावा ठंड भी बहुत लग रही थी। ऐसे समय में सभी हरिभक्त योगीजी महाराज को पधरावनी के लिए आग्रह करने लगे। उस समय उन्होंने कहा, 'मेरी तरफ से प्रमुखस्वामी पधरावनी के लिए पधारेंगे।'

'परन्तु बापा! पाठशाला में सभा भी रखी गई है।'

'प्रमुखस्वामी इस सभा में आएँगे। प्रमुखस्वामी बहुत बड़े हैं। संस्था के मालिक हैं।' इतना कहकर योगीजी महाराज रामोल जाने के लिए निकल पड़े।

उसके बाद बुखार कम हो गया। शरीर की असह्य पीड़ा के दौरान स्वामीश्री ने गुरु-आज्ञा को शिरोधार्य करके पधरावनी प्रारम्भ कर दी। एक... दो... पाँच... पंद्रह... पचीस करते हुए उन्होंने कुल पैंतालीस पधरावनी की। उसके बाद वे पाठशाला में आयोजित सभा में पधारे। बुखार से टूटे हुए शरीर में जो कुछ भी शक्ति बची थी, वह पधरावनियों में समाप्त हो गई। इसलिए प्रवचन करते समय स्वामीश्री के शब्द रुक-रुककर टूटने लगे। शरीर काँपने लगा, फिर भी किसी को उसका आभास तक न हुआ। केवल योगीजी महाराज की आज्ञानुसार कार्यक्रम समाप्त करके स्वामीश्री रामोल पहुँचे।

वहाँ पर दूध की डेरी के ओटे पर बिराजमान होकर योगीजी महाराज कथा कर रहे थे। उन्होंने जैसे ही स्वामीश्री को देखा कि घोषणा कर दी - 'अब हमारे प्रमुखस्वामी आए हैं, वे बात करेंगे।'

इस आज्ञा का पालन करने के लिए शरीर अंदर से इन्कार कर रहा था, परन्तु स्वामीश्री ने अपने गुरु योगीजी महाराज की इस आज्ञा को शिरोधार्य करके प्रवचन शुरू कर दिया। उसके बाद वे योगीजी महाराज के निवास स्थान पर पधारे। यद्यपि उनके उत्साह के साथ शरीर का संतुलन बैठ नहीं सका। उस परिस्थिति में हकाभाई स्थिति को समझ गए। इसलिए उन्होंने आधा प्रवचन ही समाप्त करके सभा के समापन की जय बुलाई। स्वामीश्री को अपने निवास पर ले गए और उन्हें लेटा दिया गया। उसके बाद उनकी दवा शुरू की गई।

इस प्रकार जब तक शरीर ढल न जाए, तब तक स्वामीश्री गुरु की आज्ञा के पालन में कोई कमी नहीं आने देते थे।

'अडग संग्रामने समे ऊभा रहे, अर्पवा शीश आनंद मनमां;
चाकरी सुफल करवा तणे कारणे, विकस्युं वदन उमंग तनमां,
वचन प्रमाणे तेनी पेठे वर्तता, एक पग भर ऊभा ज सूके...'

वह सिंधुडा उनकी रग-रग में गूँजता रहा। तन के साथ-साथ गुरु-आज्ञा में स्वामीश्री ने मन का भी होम कर दिया था। सन् 1963 की अवधि में शास्त्रीजी महाराज की प्रासादिक वस्तुएँ एकत्रित करते हुए मुंबई के एक हरिभक्त को जानकारी मिली कि प्रमुखस्वामी महाराज के पास भी इसी प्रकार की एक प्रासादिक माला है। इसलिए उन्होंने उस माला को स्वयं को देने के लिए स्वामीश्री से आग्रह किया, परन्तु वह माला स्वामीश्री के लिए अत्यन्त ही मूल्यवान थी। उसका कारण यह था कि भगवान स्वामिनारायण द्वारा फेरी गई और शास्त्रीजी महाराज द्वारा खूब प्रसन्न होकर योगीजी महाराज के कहने से उसे प्रमुखस्वामी महाराज को दी गई। इसीलिए स्वामीश्री ने कहा, 'यह माला मुझे योगीजी महाराज ने दिलाई है, इसलिए इसे मैं किसी को नहीं दे सकता।'

वह सुनकर उस हरिभक्त ने एक युक्ति सोचकर कहा, 'कोई आपत्ति नहीं, लेकिन निवास में मेरे सम्बंधी लोग हैं, उनको दर्शन कराने तक मुझे दे दीजिए। बाद में मैं माला वापस कर दूँगा।'

वह हरिभक्त पुराने और श्रीमंत थे। शास्त्रीजी महाराज की सेवा भी उन्होंने की थी, इसलिए स्वामीश्री ने उन्हें माला देते हुए कहा, 'पाँच-दस मिनट में मेरी पूजा पूरी होगी, तब तक आप दर्शन कराकर माला वापस ले आओ।'

परन्तु वह हरिभक्त माला लेकर गया तो चला ही गया। उसके बाद तो वह माला लेकर वापस आया ही नहीं। इतना ही नहीं, स्वामीश्री माला वापस लेने की बात बंद कर दें, ऐसी सिफारीश उस हरिभक्त ने योगीजी महाराज को भी कर दी।

इसीलिए अहमदाबाद में एकबार स्वामीश्री जब प्रातःपूजा कर रहे थे, तो योगीजी महाराज। उस हरिभक्त का हाथ पकड़कर स्वामीश्री के पास ले आए और बोले, 'इस हरिभक्त को आपने प्रासादिक माला दी थी। उसे अब वापस लेने का संकल्प मत कीजिए। लो आशीर्वाद।'

'बहुत अच्छा। आपकी इच्छा से मिली थी और आप ही की इच्छा से भले ही इनके पास माला रहे।' इस प्रकार कहते हुए स्वामीश्री ने तुरन्त ही गुरुवचन को शिरोधार्य कर लिया। उसके बाद उन्होंने कईबार कहा, 'एकबार योगीजी महाराज ने कहा, उसके बाद किसी भी दिन उस माला के सम्बंध में मेरे अंदर कोई इच्छा न हुई।'

प्राण के समान उपहार जैसी माला को इस प्रकार सेकन्ड मात्र में भूल जाना यह गुरुभक्ति का कोई सामान्य स्तर नहीं है। गुरुभक्ति की अपेक्षा बहुत बड़ी होती है। उस उच्चतम कक्षा पर आसन जमाकर बैठे हुए गुरुभक्त थे – प्रमुखस्वामी महाराज!

उन्होंने 4 अक्टूबर 1995 को अपने गुरुदेव का स्मरण करते कहा, 'उनका वचन भगवान का वचन। ऐसा मानकर ही शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की सेवा की। वे जो कुछ कहते, उसमें कोई शंका नहीं। अलग विचार अथवा मन अलग न पड़े। शास्त्रीजी महाराज का वचन और योगीजी महाराज प्रसन्न रहें, यही विचार सदैव मन में रहता था। इस प्रकार का वर्तन आज भी याद करके आनन्द और सुख का अनुभव होता है।'

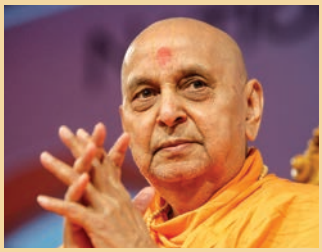

'उनका वचन भगवान का ही वचन मानकर ही मैंने शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की सेवा की। वे जो कहते थे, उसमें कोई शंका नहीं। विचार अथवा मन अलग न थे। शास्त्रीजी महाराज का वचन और योगीबापा प्रसन्न हों, ऐसा विचार संदैव मेरे मन में रहता था। उसी प्रकार से बर्ताव किया, तो आज आनन्द और सुख है।'

– प्रमुखस्वामी महाराज

गुरु के वचन में तन-मन को प्रवाहित कर देनेवाले स्वामीश्री को गुरु के प्रति 'जे जे लीला करो तमे लाल, तेने समजुं अलौकिक ख्याल' का दिव्यभाव भी रहता था।

एकबार सारंगपुर में ठाकुरजी के उपयोग के लिए कंपाला से बरतन आए हुए थे। उन बरतनों में से कुछ गोंडल मंदिर के लिए और कुछ सारंगपुर मंदिर के लिए रखने की बात योगीजी महाराज ने की। उसके अनुसार बरतनों को अलग-अलग रख दिया गया, परन्तु उस घटना के कुछ ही दिनों बाद योगीजी महाराज ने सारंगपुर मंदिर के लिए रखे गए बरतन भी हर्षदभाई चावडा नाम के एक युवक को देकर कहा, 'इसे तुम गोंडल ले जाओ।' योगीजी महाराज की आज्ञा होते ही वह युवक बरतनों को लेकर निकल गया। संस्था का अध्यक्ष होने के कारण गोंडल, सारंगपुर आदि मंदिरों के हिसाब-किताब में, विकास में, समान दृष्टि से काम कर रहे प्रमुखस्वामी महाराज से उस युवक की भेंट हो गई। स्वामीश्री ने उससे पूछा, 'क्या ले जा रहे हो?' उस युवक ने जो सच था, उसे बता दिया कि 'सारंगपुर के बरतनों को भी योगीजी महाराज ने गोंडल में दे देने के लिए कहा है, इसलिए मैं गोंडल ले जा रहा हूँ।'

यह मात्र एक ही प्रसंग नहीं, उसके पहले अन्य अवसरों पर भी किसी भी व्यवस्थापक के मस्तिष्क का संतुलन बिगड़ जाए उस सीमा तक योगीजी महाराज ने गोंडल मंदिर के प्रति अपना पक्षपात व्यक्त किया था, परन्तु स्वामीश्री को अपने गुरु योगीजी महाराज के इस चरित्र में लेशमात्र का भी संदेह न हुआ।

उन्होंने जितना शीघ्र सम्भव हो सके उतना जल्दी हर्षदभाई को गोंडल की तरफ चल देने की बात की। इतना ही नहीं, बरतन के साथ बिदाई के समय मार्ग में खाने-पीने की वस्तु भी उन्हें दिलाया और कहा, 'एक बात विशेष ध्यान में रखना। एक गुरु योगीजी महाराज के समक्ष दृष्टि रखना। आध्यात्मिक रूप से प्रगति करने का वह एकमात्र उपाय है।'

गुरु के प्रति प्रमुखस्वामी महाराज का दासभाव भी अत्यन्त ही दृढ़ रहा। वे सदैव गुरु की छाया में ही रहने में धन्यता की अनुभूति करते थे। इसीलिए गुरु की अपेक्षा अपनी महत्ता बढ़े, यदि ऐसी कोई भी गतिविधि होती, तो उसे वे रोक देते थे।

सन् 1965 में अचारडा आए हुए स्वामीश्री उस गाँव के स्वामिनारायण मंदिर में निवास किए। उस मंदिर की ओसारी में अत्यन्त ही प्रात:काल में सेवक प्रगट भगत नित्यपूजा कर रहे थे। वे अपनी नित्यपूजा में स्वामीश्री की मूर्ति भी रखे हुए थे। आज जब वे पूजा कर रहे थे, उसी समय स्वामीश्री को किसी कार्यवश उधर से गुज़रना पड़ा। उस समय उनकी दृष्टि सेवक की पूजा में रखी गई अपनी मूर्ति पर पड़ गई। उसे देखते ही स्वामीश्री नीचे झुक गए और अपना फोटो स्वयं ही उठाकर फाड़ डाले और उसे बाथरूम में फेंक दिए। उसी के साथ फटकारते हुए उन्होंने सेवक से कहा कि 'योगीजी महाराज जहाँ बिराजमान हों, वहाँ पर किसी अन्य का फोटो न रखा जाए। एक ही गुरु को स्वीकार किया जाता है।'

योगीजी महाराज स्वयं प्रमुखस्वामी महाराज की अपरंपार महिमा कभी-कभी प्रस्तुत करते थे। फिर भी उनके हृदय में किसी भी प्रकार से अपनी पूजा कराने, अपने को सम्मानित कराने की लेशमात्र की भी इच्छा नहीं रहती थी। उसके

अतिरिक्त किसी के भी हृदय में ऐसा भाव अंकुरित नहीं होने देते थे। उनकी गुरुभक्ति और दासत्वभक्ति का यह महत्वपूर्ण पहलू है।

इसी सन्दर्भ में 27 अक्टूबर, 1994 की प्रात:काल में राजकोट में एक अनोखा प्रसंग घटित हुआ। उस दिन कुछ हरिभक्तों के साथ आयोजित एक गोष्ठि में स्वामीश्री के हृदय से शब्दों का प्रवाह फूट पड़ा – ''योगीबापा (योगीजी महाराज) गौण हो जाए, ऐसा मैंने अपने जीवन में कभी भी नहीं होने दिया। शास्त्रीजी महाराज के धामगमन के पश्चात बहुत से पुराने हरिभक्त ऐसे थे, जो मुझे कहते कि 'शास्त्रीजी महाराज ने सत्ता आपको सौंप दी है। गद्दी पर आपको बैठना चाहिए। जब आपको चादर ओढ़ाई गई, तो उस समय शास्त्रीजी महाराज स्वयं ही लिखे थे, 'मेरे स्थान पर यह नारणदा हैं।'

''परन्तु मैंने कहा, 'आपका कहना सबकुछ ठीक है, लेकिन मेरे मतानुसार जोगी महाराज अर्थात् जोगी महाराज। मेरी सत्ता जोगीजी महाराज के लिए नहीं।' मेरी पूजा में कोई आए तो उसे मैं निकाल देता था। लोग मुझे चाहे जो कहें, परन्तु मेरा निश्चय दृढ़ था कि 'मुझे जोगीबापा का सेवक होकर ही रहना है।'

''मैं समझता था कि 'मैं जोगीबापा के सेवक के रूप में हूँ।' लोग कहते थे कि 'जोगीबापा की अपेक्षा आपकी गद्दी ऊँची होनी चाहिए।' परन्तु समझना तो मुझे था कि 'मैं तो दास हूँ, मैं छोटा हूँ। शास्त्रीजी महाराज की कृपा से गद्दी पर बैठ गया हूँ।' जोगीबापा को आगे रखकर ही मैंने कार्य किया है। मैंने इस प्रकार का आचरण रखा है, इसीलिए इस समय मुझे शांति है।''

गुरु के प्रति इस प्रकार का अपार दासभाव और दिव्यभाव के साथ स्वामीश्री को शास्त्रीजी महाराज तथा योगीजी महाराज के प्रति 'गुरु साक्षात् परब्रह्म' का भाव रहता था।

5 मार्च, सन् 1987 की रात्रि को पुरुषोत्तमपुरा में आयोजित एक प्रेरक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम के दौरान संतों ने प्रमुखस्वामी महाराज से पूछा, 'स्वामी! आप और शास्त्रीजी महाराज का सम्बंध कैसा था? परस्पर मित्र जैसा अथवा गुरु-शिष्य जैसा! भक्त-भगवान जैसा अथवा माता-पुत्र जैसा!'

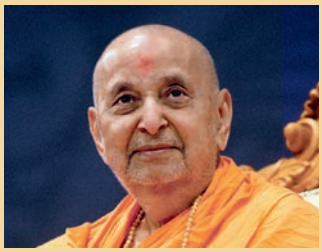

'शास्त्रीजी महाराज तो साक्षात भगवान के स्वरूप हैं। इसलिए हमारे लिए तो भक्त-भगवान का सम्बंध कहा जाएगा। भगवान का स्वरूप मानकर आश्रय में आया, इसलिए भक्त-भगवान का सम्बंध रखेंगे, तो हमें सुख का अनुभव होगा।'

– प्रमुखस्वामी महाराज

वह सुनकर स्वामीश्री ने कहा, 'शास्त्रीजी महाराज तो साक्षात् भगवान के स्वरूप थे। अत: हमारे लिए तो भक्त-भगवान का सम्बंध कहा जाएगा। भगवान का स्वरूप मानकर आश्रय में आए हुए अर्थात् भक्त-भगवान का सम्बंध रखें, तो हमें आनन्द का अनुभव हो।'

उसी प्रकार से 18 जून, 2002 को तीथल में आयोजित किशोर शिविर में एक किशोर ने स्वामीश्री से पूछा, 'बापा! आपको शास्त्रीजी महाराज की पहचान लिखकर देने को कहा जाए, तो आप क्या लिखेंगे?'

'भगवान के स्वरूप हैं। लिख लीजिए।' – स्वामीश्री ने तत्काल ही कहा। वही बात लिखवाते हुए उन्होंने हस्ताक्षर भी कर दिया और कहा, 'शास्त्रीजी महाराज भगवान श्रीजीमहाराज के धारक और साक्षात् स्वरूप थे। यदि ऐसी दृढ़ता हो जाए, तो श्रीहरि का आनन्द और उमंग रहे।'

श्वेताश्वतर उपनिषद में कहा गया है, 'यस्य देवे पराभक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ, तस्यैते कथिता ह्यर्था: प्रकाशन्ते महात्मन:' अर्थात् भगवान के प्रति जैसी भक्ति है, वैसी ही भक्ति यदि गुरु के प्रति हो, तो सभी अर्थ सिद्ध हो जाते हैं। यह सिद्धान्त स्वामीश्री के जीवन में मूर्तिमान स्वरूप में देखने को मिलता था। गुरु के प्रति ऐसी भक्ति के कारण स्वामीश्री सदैव पूर्णकाम दिखाई देते थे।

एकबार उन्होंने सारंगपुर में कहा था कि 'मुझे सभी लोग कहते हैं, 'आपको नोबल प्राइज प्रदान करना है।' मैंने कहा, 'मुझे नोबल प्राइज का प्राइज का प्राइज मिल गया। शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज ये दोनों मिले, उसके पश्चात् मुझे अन्य कौन सा एवॉर्ड चाहिए। हमें शास्त्रीजी महाराज-जोगीजी महाराज का आशीर्वाद मिल गया। इस दुनिया में इससे बड़ा कौना सा लाभ है?'

23 अगस्त, सन् 2012 को प्रात:काल में अहमदाबाद में ठाकुरजी का दर्शन करने के बाद स्वामीश्री जब प्रदक्षिणा में पधारे, तो वहाँ पर मनोविनोद के उद्देश्य से एक कल्पवृक्ष खड़ा हो गया। उसकी छाया में आनेवाले दो ब्राह्मणों ने 'लड्डू मिल जाए तो!' ऐसा संकल्प किया। उसी समय तुरन्त एक बरतन

में लड्डू भरकर प्रस्तुत हो गया। उसे देखकर एक हलुआ की इच्छा रखनेवाले ने हलवा की और एक कथाप्रेमी ने माइक की इच्छा व्यक्त की, तो वह भी तुरन्त पूरा हो गया।

इस प्रकार 'कल्पतरु सभी का संकल्प पूरा करता है। पास में जाकर यदि प्रेमपूर्वक उसकी सेवा की जाए तो।' उसी दौरान एक संत ने स्वामीश्री से पूछा, 'बापा! आपका कोई संकल्प है? यदि हो तो कीजिए? इस कल्पवृक्ष के नीचे सत्य हो जाएगा।'

'मुझे तो शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज का कल्पवृक्ष मिला है। उसी में सारे संकल्प सिद्ध हो जाते हैं। आपको तो संकल्प करना है। जब कि मुझे संकल्प हो चुका है।' इस प्रकार स्वामीश्री ने अत्यधिक उमंग के साथ कहा।

इस प्रकार गुरु में ही खेलते-कूदते प्रमुखस्वामी महाराज ने गुरु की सेवा की और गुरु का साक्षात्कार भी प्राप्त किए।

9 दिसम्बर 1986 की प्रात:काल में उनसे पूछा गया, 'स्वामीजी! आप जब भी इच्छा करते हैं, उस समय शास्त्रीजी महाराज आपको दर्शन देते हैं?' वह सुनकर स्वामीश्री ने कहा, 'अपने साथ में ही हों, ऐसे दिखाई पड़ते हैं। वे साथ में ही हैं।'

उसी प्रकार से सम्प्रदाय के गुरु-शिष्य सम्बंध के विषय में गहन खोज कर रहे श्री ब्रायन हचिंन्सन ने स्वामीश्री से पूछा, 'योगीजी महाराज के धाम में जाने के पश्चात् आप गुरु के रूप में सामने आए और सभी को आपके प्रति निष्ठा हो गई। हरिभक्तों के लिए वह सहज था, परन्तु योगीबापा के धाम में जाने के पश्चात् आपका कोई गुरु नहीं था तो फिर किस प्रकार से आप अपने को एडजस्ट किए?'

'हमारे लिए तो (दृढ़तापूर्वक) गुरु कहाँ गए हैं? मैं मानता ही नहीं कि वे कहीं गए हैं। वे (निरन्तर साथ में) हैं।' स्वामीश्री ने कहा।

इस प्रकार अप्रतीम गुरुभक्ति के कारण गुरु के साथ उनका तादात्म्य स्थापित हो गया था। उसके बावजूद गुरु की कृपादृष्टि के लिए वे निरन्तर अभिलाषा रखते थे। इसीलिए उन्होंने अपनी अंतिम विधि के स्थल के रूप में कहा था, 'शास्त्रीजी महाराज की दृष्टि मुझ पर पड़ती रहे, उस प्रकार से मुझे रखना।'

इस प्रकार से सारंगपुर में खड़ा हो गया प्रमुखस्वामी महाराज का स्मृति मंदिर, जिसे उनकी गुरुभक्ति का ही स्मारक कहा जा सकता है। उसे देखते ही विचार पैदा होता है कि मनुष्यमात्र को दो मस्तिष्क, दो फेफड़े, दो हाथ, दो पैर, दो आँखें, दो कान, दो नासिकाएँ होती हैं, उसी के द्वारा वह श्वास लेता है, सुनता है, देखता है, चलता है, पकड़ता है और विचार करता है। स्वामीश्री के लिए अवयव के रूप में थे - शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज।

हाँ, वही दो उनके मस्तिष्क थे। शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज से अलग कोई अन्य विचार स्वामीश्री के मन में कभी उत्पन्न ही न हुआ।

वह दो उनके दो फेफड़े थे। शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज को विस्मृत करके स्वामीश्री ने एक भी श्वास नहीं खींचा और न तो कोई श्वास बाहर निकाला।

वही दो थे - उनके दोनों चरण। शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज को स्वीकार न हो, ऐसे किसी भी स्थल पर स्वामीश्री कभी गए ही नहीं।

वही दोनों थे उनके दो हाथ, जिसमें शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की सहमति न हो, ऐसा कोई काम स्वामीश्री हाथ में लिए ही नहीं।

वही दो उनकी आँखें थीं। शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज के अतिरिक्त स्वामीश्री इस दुनिया में कोई अन्य वस्तु देखते ही न थे।

वही दो उनके कान थे। शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की रुचि के खिलाफ कोई भी विवरण सुनने में स्वामीश्री ने कभी भी अपनी रुचि न प्रगट की।

वास्तव में उनकी गुरुभक्ति शब्दों द्वारा नहीं व्यक्त की जा सकती; वह इतनी अपार और अगाध है। ◆

स्वामिनारायण प्रकाश

(फार्म नं. 4, नियम-8)

1. *प्रकाशन संस्था* : *स्वामिनारायण अक्षरपीठ, शाहीबाग, अहमदाबाद-380004.*
2. *प्रकाशन अवधि* : *मासिक*
3. *मुद्रक का नाम* : *स्वामिनारायण अक्षरपीठ, शाहीबाग, अहमदाबाद-380004.*
4. *प्रकाशक* : *स्वामिनारायण अक्षरपीठ, शाहीबाग, अहमदाबाद-380004.*
5. *संपादक का नाम* : *साधु स्वयंप्रकाशदास*
6. *राष्ट्रीयता* : *भारतीय*
7. *पता* : *स्वामिनारायण अक्षरपीठ, शाहीबाग, अहमदाबाद-380004.*

मैं साधु स्वयंप्रकाशदास एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण सत्य है।

दि. 1-3-2021,

(हस्ताक्षर) साधु स्वयंप्रकाशदास

नेनपुर में परमपूज्य महंत स्वामी महाराज का धर्मलाभ...

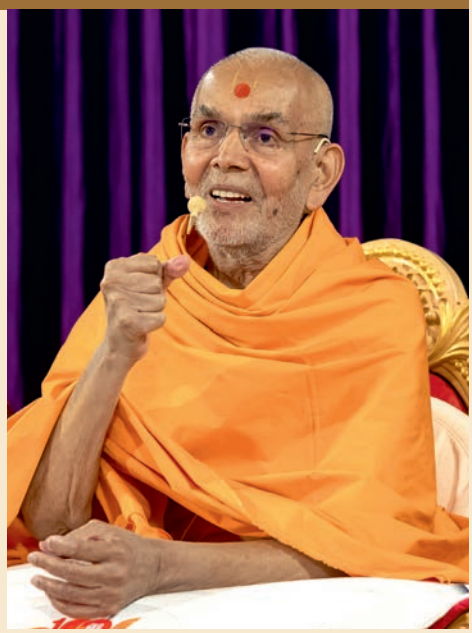

नेनपुर अर्थात् अहमदाबाद से 32 कि.मी. की दूरी पर स्थित एक छोटा सा गाँव। इस गाँव का नाम देश-विदेश में रहनेवाले लाखों भक्तों के हृदय पर अंकित हो चुका है। पिछले 11 महीने से भी अधिक समय से गुरुहरि परमपूज्य महंत स्वामी महाराज भगवान श्रीस्वामिनारायण के उस प्रासादिक नेनपुर में निवास कर रहे हैं। वहाँ पर स्वामीश्री के पावन सान्निध्य में बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण शांतिवन के परिसर में एक अनोखा आध्यात्मिक वसंत खिल उठा है। नेनपुर में अपने निवास के दौरान स्वामीश्री का आध्यात्मिक प्रवाह विभिन्न माध्यमों द्वारा देश-विदेश में दूर-दराज के भक्तों-भाविकों तक लगातार प्रवाहित हो रहा है।

वेब कास्टिंग के माध्यम से सप्ताह में दो बार उनकी प्रातःपूजा के दर्शन का लाभ और विशिष्ट सभाओं में भी दिव्य लाभ सभी को मिल रहा है। पूजा में बी.ए.पी.एस. के विभिन्न मंदिरों के संतगण तथा कभी-कभी नवयुवक वर्ग कीर्तन-भक्ति प्रस्तुत करके स्वामीश्री का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। दिन के दौरान पराभक्ति में निमग्न स्वामीश्री धार्मिक ग्रंथों का वाचन तथा उस पर सुंदर मनन निरूपण द्वारा गूढ़ आध्यात्मिक रहस्यों को समझाते हैं। संतों के साथ आयोजित प्रश्नोत्तरी तथा गोष्ठियों में भी स्वामीश्री का अनोखा आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा है।

शारीरिक, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक आदि प्रश्नों में स्वामीश्री हरिभक्तों को व्यावहारिक मार्गदर्शन द्वारा समाधान प्रदान करते हैं। पत्र, फोन, वीडियो कॉल, कॉन्फरेन्स आदि विभिन्न माध्यमों द्वारा स्वामीश्री का दिव्य सान्निध्य प्राप्त कर रहे संत और हरिभक्तजन गुरुहरि के प्रत्यक्ष मिलने का आनन्द अनुभव करते हैं। बी.ए.पी.एस. संस्था द्वारा आयोजित छोटे-बड़े उत्सवों, सत्संग सभाओं अथवा दिव्य प्रसंगों में भी स्वामीश्री ने नेनपुर में रहकर सभी लोगों को धर्मलाभ से अलंकृत किया है। यहाँ पर ऐसे कुछ विशिष्ट उत्सव प्रसंगों में स्वामीश्री द्वारा दिए गए धर्मलाभ का संक्षेप में आचमन कीजिए।

● 19 नवम्बर, 2020 ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज ने लंदन में निसडन में भव्य बी.ए.पी.एस. शिखरबद्ध मंदिर की रचना करके एक इतिहास रचा है। उनके प्रदानों का मूल्यांकन करते हुए वहाँ के स्थानीय प्रशासन में मंदिर के पास बने हुए रोड का नाम 'प्रमुखस्वामी मार्ग' रखकर उन्हें एक स्मरण-अंजलि अर्पण की है। आज के दिन स्वामीश्री ने नेनपुर में नामकरण बोर्ड की प्रतिकृति का पूजन करके उसका अनावरण किया। उसके साथ ही साथ युरोप की सात भाषाओं - फ्रेन्च, पोर्तुगीज, स्पेनिस, इटालियन, जर्मन, पोलिस तथा रशियन भाषाओं में अनुवादित हुए सत्संग दीक्षा ग्रंथ को अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की दृष्टि कराते हुए स्वामीश्री ने उसका उद्घाटन किया।

● 24 नवम्बर, 2020 को स्वामीश्री के करकमलों से ऊना के बी.ए.पी.एस. मंदिर के प्रथम स्तंभ का पूजन किया।

● 30 नवम्बर, 2020 को बी.एस.पी.एस. स्वामिनारायण संस्था के एकेडेमिक रिसर्च के लिए अनेक प्रकल्पों के लिए नये वेबसाइट का उद्घाटन किया।

● 7 दिसम्बर, 2020 को तारीख के अनुसार ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज का 99वाँ जन्मदिवस मनाया गया। उक्त अवसर पर स्वामीश्री की प्रातःपूजा से लेकर समग्र दिवस के दौरान गुरुहरि प्रमुखस्वामी महाराज के अनंत गुणों की स्मृतियाँ की गईं। संध्याकाल में जन्मजयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में संत सभा के दौरान विभिन्न प्रासंगिक प्रवचनों द्वारा संतों ने ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज की अप्रतीम महिमा का गायन किया।

उसके अतिरिक्त आज से प्रारम्भ करके अगहन शुक्लपक्ष अष्टमी, 22 दिसम्बर तक (तिथि के अनुसार जन्मजयंती महोत्सव तक) निश्चित दिवसों पर 'प्रमुखपर्व' की विशिष्ट सभाओं का आयोजन किया गया।

● 11 दिसम्बर, 2020; उत्तरी

अमेरिका की तरफ से 'स्वामीश्री की वर्च्युअल पधरावनी' का आयोजन किया गया। पधरावनी के दौरान ऐसा लगता था कि स्वामीश्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज के साथ साक्षात् अपने घर पधार रहे हों, उसी प्रकार से उत्तरी अमेरिका के दो बालकों ने स्वामीश्री का वर्च्युअल स्वागत किया। बालकों ने स्वामीश्री के साथ प्रश्नोत्तरी की, जिसमें स्वामीश्री ने उनके प्रश्नों का समाधान किया।

● आज उत्तर भारत के कार्यकर्ताओं को भी स्वामीश्री का लाभ प्राप्त हुआ। शिमला और जालंधर क्षेत्रों में कार्य कर रहे कार्यकर्ताओं को शक्ति मिली। उसके लिए स्वामीश्री ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

● 14 दिसम्बर, 2020 को स्वामीश्री ने भावनगर के बी.ए.पी.एस. मंदिर में प्रमुखस्वामी महाराज की स्मृति के रूप में प्रतिष्ठित किए जानेवाले श्रीहरि के चरणारविंद का पूजन किया।

● 15 दिसम्बर, 2020 को सुभाषभाई पटेल (दार-ए-सलाम, तन्जानिया) धाम में पधारे, उसके उपलक्ष्य में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में स्वामीश्री और वरिष्ठ संतों ने उनके गुणों के प्रसंगों को याद करके भक्तिअंजलि अर्पण की।

● 16 दिसम्बर, 2020 से आरम्भ हुए पवित्र धनुर्मास के उपलक्ष्य में स्वामीश्री ने लगातार एक महीने तक नई ब्रह्मविद्या का पाठ करके आध्यात्मिक लाभ प्रदान किया।

● 18 दिसम्बर, 2020 बोचासण से जबलपुर तक पदयात्रा करनेवाले चार भक्तों को स्वामीश्री ने आज के दिन आशीर्वाद प्रदान किया।

● 21 दिसम्बर, 2020 को स्वामीश्री ने बी.ए.पी.एस. संस्था के भूतपूर्व जनरल सेक्रेटरी श्री हरिशभाई दवे धाम में पधारे, उसके उपलक्ष्य में आयोजित प्रार्थनासभा में उनके गुणों को भक्ति-अंजलि अर्पण की।

● 22 दिसम्बर, 2020 को ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज की 99वाँ जन्मजयंती महोत्सव अत्यन्त ही धूमधाम से मनाया गया। आज के दिन स्वामीश्री ने वचनामृत में ब्रह्मसूत्र स्वामिनारायण भाष्य तथा सारंग स्तुति ग्रंथ का विमोचन किया।

● 24 दिसम्बर, 2020 को बंगाली भाषा में अनुवादित सत्संग दीक्षा ग्रंथ का स्वामीश्री ने विमोचन किया। उसके साथ ही वर्च्युअल टेक्नोलोजी के माध्यम से मनाए गए प्रमुखस्वामी महाराज के जन्मजयंती महोत्सव में सेवा में जुड़े हुए संतों-हरिभक्तों और युवकों को स्वामीश्री ने आशीर्वाद प्रदान किया।

● 28 दिसम्बर, 2020 : कुछ महीनों पूर्व स्वामीश्री के हाथों

ऑस्ट्रेलिया तथा न्युजीलैण्ड के हरिभक्तों के गृह मंदिरों के लिए श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की पंचधातु की लगभग 700 मूर्तियाँ पूजित और प्रतिष्ठित हुई थीं, जो इस समय हरिभक्तों के गृहमंदिर में बिराजमान हैं। आज उसी प्रकार की पंचधातु की 650 मूर्तियाँ मेलबोर्न मंदिर के सभामंडप में बिराजमान थीं। ऑस्ट्रेलिया के संतों ने उन मूर्तियों की पूर्व महापूजाविधि सम्पन्न की।

● आज के दिन स्वामीश्री ने चाणसद के प्रासादिक रामजी मंदिर के जीर्णोद्धार की ईंटों का पूजन किया। जहाँ पर अपनी बालउम्र से ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज नित्य दर्शन के लिए जाया करते थे।

● 29 दिसम्बर, 2020 को स्वामीश्री ने न्युजीलैण्ड तथा फीजी में हरिभक्तों के घर प्रतिष्ठित होनेवाली अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की 125 धातु-मूर्तियों का प्रतिष्ठा-पूजन करते हुए नेनपुर में उसी अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की मूर्तियों की वेदोक्त पूजन-प्रतिष्ठा विधि सम्पन्न की।

● 31 दिसम्बर, 2020 का दिन विशिष्ट था। आज स्वामीश्री के करकमलों द्वारा यु.के. के बर्मिंगम हॉल तथा मांचेस्टर में निर्मित बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण मंदिर में प्रतिष्ठित होनेवाली मूर्तियों की वेदोक्त विधिपूर्वक पूजन और प्रतिष्ठाविधि सम्पन्न की।

हाल ही में बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण मंदिरों के पाटोत्सव भक्तिभावपूर्वक मनाए गए। तारीख और तिथि के अनुसार मनाए गए इस महोत्सव में से कुछ मंदिरों के पाटोत्सव के उपलक्ष्य में स्वामीश्री ने उन मंदिरों की मूर्तियों की स्क्रीन पर दर्शन करते हुए उनकी आरती उतारी। उसके पश्चात टेक्नोलॉजी के

माध्यम से आईपेड पर बटन को क्लिक करके मूर्तियों पर अभिषेक किया।

● 22 जनवरी, 2021 को यु.ए.ई. के अग्रणी भक्तराज श्री रोहितभाई पटेल (दुबई) की श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई थी, जिसमें स्वामीश्री तथा वरिष्ठ संतों ने रोहितभाई के सत्संग के प्रति अनन्य निष्ठा का महिमागान करते हुए भावांजलि अर्पण की।

● 25 जनवरी, 2021 को प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में बी.ए.पी.एस. संस्था द्वारा आयोजित 'पारिवारिक शांति अभियान' के अंतर्गत ऑस्ट्रेलिया तथा न्युजीलैण्ड में आयोजित किया जा रहा है। आज के दिन स्वामीश्री ने उक्त अभियान के अंतर्गत घर-घर पहुँचनेवाली सामग्रियों का वर्च्युअल पूजन किया और साथ ही जिन-जिन घरों में पारिवारिक अभियान पहुँचे उन सभी के दु:ख दूर हो जाएँ, ऐसी प्रार्थना की गई।

● 26 जनवरी, 2021, भारत के 72वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर स्वामीश्री ने राष्ट्रध्वज फहराकर अपनी राष्ट्रभक्ति प्रस्तुत की।

● 28 जनवरी, 2021, पौष पूर्णिमा अर्थात् गुणातीतानंद स्वामी का दीक्षा दिवस। भगवान श्रीस्वामिनारायण ने गुणातीतानंद स्वामी को दीक्षा प्रदान करके अपने अक्षरब्रह्म के रूप में उन्हें पहचान प्रदान की। उस ऐतिहासिक अवसर को आज 211 वर्ष पूर्ण हो गए थे। उक्त अवसर पर स्वामीश्री की प्रात:पूजा में संगीतज्ञ संतों ने गुणातीतानंद स्वामी की स्मृति कराते हुए महिमा सम्बंधी कीर्तनगान किया।

आज के शुभ अवसर पर स्वामीश्री ने बंगाली भाषा में भाषांतरित तीन पुस्तकें Concepts of Swaminarayan Sampraday, प्रागजी भक्त (परीक्षा पुस्तक) तथा सुचरितम् का विमोचन किया। अपने आशीर्वचन में स्वामीश्री ने कहा, 'आज गुणातीत दीक्षा दिवस है। श्रीजीमहाराज जिस-जिस ब्रह्माण्ड में जाएँ, गुणातीतानंद स्वामी को साथ में ले जाते हैं और साथ में मुक्तों तथा ऐश्वर्य भी लेकर जाते हैं। ब्रह्म और परब्रह्म का जोड़ अनादि का है। गुणातीतानंद स्वामी मूलअक्षर हैं, जो अनंतकोटि मुक्तों को धारण किए रहते हैं।'

आज के दिन पौष पूर्णिमा का दिन अर्थात् सम्प्रदाय की परम्परा के अनुसार डाबरा उत्सव का दिवस। जिसे स्वामीश्री ने ब्रह्मोत्सव का नाम प्रदान किया है। इस प्रकार नैनपुर में बिराजमान स्वामीश्री के सान्निध्य में लगातार आध्यात्मिक कार्यक्रमों का प्रवाह बहता है। ◆

सूरत के आंगन में कणाद में नये शिखरबद्ध मंदिर के निर्माण-कार्य का शुभारंभ...

31 जनवरी, 2021 को परमपूज्य महंत स्वामी महाराज ने सूरत में कणाद में निर्माणाधीन नये शिखरबद्ध बी.ए.पी.एस. मंदिर के निर्माण-कार्य का शुभारंभ कराया। उक्त अवसर पर पूज्य कोठारी भक्तिप्रियदास स्वामी तथा पूज्य घनश्यामचरणदास स्वामी की उपस्थिति में श्रुतिप्रकाशदास स्वामी ने पूजनविधि कराया। नेनपुर में बिराजमान स्वामीश्री भी ऑनलाइन वीडियो कॉल के माध्यम से उक्त विधि में शामिल हुए थे।

स्वामीश्री ने आशीर्वाद देते हुए कहा, 'श्रीजीमहाराज से लेकर प्रमुखस्वामी महाराज तक सभी सूरत पधारे हैं और संकल्प किए हैं कि यहाँ पर भव्य मंदिर होगा। उस संकल्प पर मंदिर बनेगा।' हमें भक्तिभावपूर्वक यह सब पूरा करना है। अंत में प्रसंग के अनुसार समर्पण गीत पर युवकों ने नृत्यांजलि प्रस्तुत की।

परमपूज्य महंत स्वामी महाराज के करकमलों द्वारा सूरत में नये मंदिर निर्माण-कार्य का प्रारम्भ हुआ। फलस्वरूप सभी का हृदय आनन्द से भर उठा था। ◆

वसंत पंचमी पर ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज की भाववंदना करते हुए 'यज्ञपुरुष पर्व' आयोजित किया गया...

वसंत पंचमी उत्सव पर्व

प्रतिवर्ष ऋतुराज वसंत का आगमन नई चेतना का संचार लेके आता है। नये कोपलों से आच्छादित पेड़-पौधे और सुगंध से महकते हुए उपवनों से वातावरण में अद्‌भुत रौनक आ जाती है। वसंत के आगमन का अभिनंदन करते हुए प्रथम उत्सव अर्थात् वसंत पंचमी माघ शुक्लपक्ष पंचमी और उसमें भी स्वामिनारायण सम्प्रदाय के लिए अत्यन्त ही गौरवशाली दिवस। 12 फरवरी से 16 फरवरी तक वसंत पंचमी उत्सव पर्व स्वामीश्री के सान्निध्य में वर्च्युअल माध्यम से धूमधाम से मनाया गया।

वसंत पंचमी के शुभ दिवस पर भगवान स्वामिनारायण की परावाणी का ग्रंथ शिक्षापत्री का प्रादुर्भाव हुआ था। सद्‌गुरु ब्रह्मानंद स्वामी, सद्‌गुरु निष्कुलानंद स्वामी तथा बी.ए.पी.एस. संस्था के आदि स्थापक ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज भी आज प्रकट हुए थे।

अक्षरपुरुषोत्तम उपासना के लिए शास्त्रीजी महाराज द्वारा कही गई चार बातें - (1) यह मुंडन कराया है, तो अक्षरपुरुषोत्तम के लिए। (2) हम तो अक्षरपुरुषोत्तम के बैल हैं। (3) अक्षरपुरुषोत्तम की बात यदि कोई मेरे सिर पर बैठकर करे, तो भी मेरे लिए कम है। (4) अक्षरपुरुषोत्तम के लिए यदि बीक जाना पड़े तो भी कम है - इन चार महावाक्यों को केन्द्र में रखकर क्रमशः प्रियस्वरूपदास स्वामी, श्रीजीकीर्तनदास स्वामी, आनन्दस्वरूपदास स्वामी तथा आदर्शस्वरूपदास स्वामी ने मननीय वक्तव्य का लाभ प्रदान किया।

उसके पश्चात् वरिष्ठ संतवर्य पूज्य कोठारी भक्तिप्रियदास स्वामी, पूज्य

विवेकसागरदास स्वामी, पूज्य डॉक्टर स्वामी तथा पूज्य त्यागवल्लभदास स्वामी ने क्रमशः अक्षरपुरुषोत्तम उपासना के प्रवर्तन के लिए गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, प्रमुखस्वामी महाराज तथा प्रकट गुरुहरि परमपूज्य महंत स्वामी महाराज के हृदय में छलकती निष्ठा की खुमारी का दर्शन कराया।

इस पर्व के अंतिम दिन 16 फरवरी को ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज के गुनगान गाए गये थे। वे वैदिक सनातन अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन के प्रखर प्रवर्तक थे। अक्षरपुरुषोत्तम सिद्धान्त के लिए अपने जीवन का होम कर देनेवाले शास्त्रीजी महाराज के कार्य में एक 18 वर्ष का नवयुवक भी शामिल हो गया था। उस समय सुविधा, सहयोग तथा साधनों के अभाव में भी शास्त्रीजी महाराज ने जो समयातीत कार्य किया, उसका साक्षी बनने का सौभाग्य उस नवयुवक को भी प्राप्त हुआ। श्रीहरि की अनन्य शक्ति के बल पर कठिनाइयों के झंझावात को भी हँसते हुए सहन करनेवाले शास्त्रीजी महाराज को उस नवयुवक ने प्रत्यक्ष देखा था। वह नवयुवक अर्थात् शास्त्रीजी महाराज के प्रिय शिष्य - ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज। उनकी दृष्टि में शास्त्रीजी महाराज का कार्य, उनका इष्टबल तथा उनकी साधुता, किस प्रकार से खिल उठी थी, उसे आज के कार्यक्रम में प्रत्यक्ष प्रस्तुत किया गया था। इसीलिए आज के कार्यक्रम का केन्द्रीय विचार था - 'ऐसे थे मेरे गुरु शास्त्रीजी महाराज।'

प्रमुखस्वामी महाराज की दृष्टि में शास्त्रीजी महाराज को देखें, तो कार्यक्रम के अंतर्गत ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज के व्यक्तित्व का एक-एक सोपान उभड़ता हुआ दिखाई दिया और घर बैठे हजारों भक्तों को उसका लाइव वेब कास्टिंग द्वारा दर्शन होता रहा। कार्यक्रम के आरम्भ में सारंगपुर के संगीतज्ञ संतवृंद ने धुन और शास्त्रीजी महाराज की महिमा का वर्णन करते हुए पदों का गायन किया।

कार्यक्रम का प्रथम सोपान प्रस्तुत हुआ - 'शास्त्रीजी महाराज का दुर्लभ कार्य' प्रमुखस्वामी महाराज की अमृतवाणी में उनके स्वानुभवों द्वारा दुर्लभ कार्य की सभी ने दिव्य झांकी देखी।

उसके द्वितीय सोपान प्रस्तुत हुआ

– 'शास्त्रीजी महाराज की भगवत्श्रद्धा' शास्त्रीजी महाराज की अनन्य भगवत्श्रद्धा को देखनेवाले प्रमुखस्वामी महाराज के वचनों द्वारा ही उस विषय विशेष को समझाया गया।

तृतीय सोपान में शास्त्रीजी महाराज की साधुता द्वारा अनेक कष्टों और कठिनाइयों तथा तिरस्कारों के बीच भी साधुता में सिरमौर शास्त्रीजी महाराज के निर्मल जीवन को प्रमुखस्वामी महाराज के अनुभवों द्वारा सभी ने आनन्द लिया। शास्त्रीजी महाराज की अद्वितीय साधुता के प्रसंगों का वर्णन किया था – पूज्य आत्मतृप्तदास स्वामी ने।

पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी ने उस वाक्य का विस्तृत निरूपण करते हुए कहा, 'शास्त्रीजी महाराज ने कहा था कि 'मेरा कर्तव्य चालू रहेगा।' वास्तव में वे वचन वर्तमान समय में सिद्ध होते दिखाई देते हैं। अंत में स्वामीश्री ने शास्त्रीजी महाराज की महिमा गाई। उन्होंने कहा : 'शास्त्रीजी महाराज के धामगमन के बाद योगीजी महाराज ने उनकी प्रवृत्तियों को अत्यधिक गतिमान किया।

प्रमुखस्वामी महाराज ने अनेक शारीरिक कठिनाइयों में भी निरन्तर विचरण करते हुए आंतरिक और बाह्य रूप से बहुत कुछ सहन किया। लाखों लोगों के मन को संतुष्ट रखा और उन्हें प्रसन्न किया।' उसके पश्चात उन्होंने कहा, 'इन चार वाक्यों में शास्त्रीजी महाराज के अंतर्मन में अक्षरपुरुषोत्तम की निष्ठा कैसी थी, वह सब बाहर आया है। यदि शास्त्रीजी महाराज प्रकट न हुए होते तो वह ज्ञान एक कोने में पड़ा रहता। छोटे-छोटे मंडलों की भाँति समाप्त हो जाता, परन्तु उसके लिए शास्त्रीजी महाराज जैसे पुरुष की जरूरत थी। उसे शास्त्रीजी महाराज ने प्रवर्तित किया।

ऐसा सरस ज्ञान सुना। ऐसे सरस संतों के मुख से कथावार्ता सुनी, तो अब हमें क्या करना है? तो हमें अक्षरपुरुषोत्तम के लिए सबकुछ होम कर देना है और वही कार्य करने जैसा है। उसी में महिमा है और उसी में तत्त्व है।'

अंत में लाइव वेबकास्ट द्वारा कार्यक्रम का जीवंत आनन्द ले रहे लाखों भक्त अक्षरपुरुषोत्तम उपासना के प्रवर्तक शास्त्रीजी महाराज की स्मृतियों के साथ आरती में शामिल हुए। इस प्रकार दो घंटे तक परमपूज्य प्रमुखस्वामी महाराज की दृष्टि से शास्त्रीजी महाराज को देखकर सभी का हृदय भी गाने लगा – ऐसे थे हमारे गुरु शास्त्रीजी महाराज। ◆

इग्लैण्ड तथा युरोप में गुजराती भाषा के नवीनतम शिक्षण के लिए बी.ए.पी.एस. संस्था को अर्पण किया गया थ्रेलफोर्ड मेमोरियल एवॉर्ड...

इग्लैण्ड तथा युरोप में गुजराती भाषा के शिक्षण तथा प्रसार करने के फलस्वरूप बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण मंदिर निसडन को इंग्लैण्ड की चार्टर्ड इन्स्टिट्यूट ऑफ लिंग्विस्टिस द्वारा 2020 का 'थ्रेलफोर्ड मेमोरियल कप' एवॉर्ड प्राप्त हुआ है।

यह एवॉर्ड सन् 1935 से भाषा के विकास का काम करनेवाले व्यक्ति अथवा संस्था को प्रतिवर्ष दिया जाता है। इसके पूर्व के एवॉर्ड विजेताओं की तुलना में यह एवॉर्ड विशेष था; क्योंकि बी.ए.पी.एस. संस्था के स्वयंसेवकों ने गुजराती भाषा के शिक्षण की शैली को मनोविनोद के साथ ज्ञानपूर्ण बनाया है। उसके अलावा वर्तमान प्रवाहों को ध्यान में रखकर नये स्वरूप को प्रदान किया है।

स्वयंसेवकों द्वारा गुजराती भाषा के अभ्यासक्रम को G.C.S.E. स्तर का बनाने के लिए विशेषज्ञों की अनेक प्रकार की सहायता लेकर 8 पुस्तक तैयार की गई हैं।

बी.ए.पी.एस. संस्था की सर्जनात्मक टीम की तरफ से यह एवॉर्ड राहुल भागवत ने स्वीकार किया। उसके साथ ही महत्वपूर्ण सेवा प्रदान करनेवाले अन्य सदस्य भी उक्त

अवसर पर उपस्थित थे। उसी उपक्रम में राहुल भागवत ने कहा था कि 'गुजराती भाषा का यह प्रशिक्षण बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण मंदिरों में आनेवाले बालकों में सांस्कृतिक एकता स्थापित करने का माध्यम बना हुआ है। गुजराती भाषा की उक्त अभियान की प्रेरणा ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज ने प्रदान की थी। गुजराती परिवार उसे सजग होकर हमारी सेवाओं को स्वीकार करके अपनी संतानों में गुजराती भाषा का संस्कार सींच रहे हैं।' ◆

तिरुपति में आयोजित दक्षिण भारत के मूर्धन्य विद्वानों के साथ अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन का बहुदिवसीय शास्त्रार्थ...

दक्षिण भारत के तत्त्वज्ञान के मूर्धन्य विद्वानों ने भगवान श्रीस्वामिनारायण प्रबोधित अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन को मौलिक और नवीन तत्त्वज्ञान के रूप में स्वीकार किया

भारतीय तत्त्वज्ञान के इतिहास में हजारों वर्षों के लंबे समय के प्रवाह में परब्रह्म भगवान श्रीस्वामिनारायण का प्रदान सदैव याद रखा जाएगा। भगवान श्रीस्वामिनारायण ने भारत के दार्शनिक इतिहास में वैदिक सनातन स्वतंत्र अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन की भेंट प्रदान करके षड्दर्शन की शृंखला में नया और मौलिक पृष्ठ शामिल किया है। ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज की आज्ञा और उनकी प्रेरणा से भगवान स्वामिनारायण प्रबोधित दर्शन का शास्त्रीय ढंग से प्रतिपादन करते हुए महामहोपाध्याय पूज्य भद्रेशदास स्वामी ने प्रस्थानत्रयी भाष्यों की रचना की है।

तिरुपति स्थित राष्ट्रीय संस्कृत विश्व विद्यालय के कुलपति श्री मुरलीधर शर्मा ने बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्था के समक्ष एक विशिष्ट संकल्प उपस्थित किया कि 'तिरुपति विद्या का धाम है। वहाँ पर संस्कृत का दार्शनिक अध्ययन होता है। शास्त्रार्थ भी होते हैं। इस समय जब अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन का प्रतिपादन करनेवाले भाष्यों की रचना की जा रही है, तो उस दर्शन का परिचय वहाँ के दक्षिण भारतीय विद्वानों को भी होना चाहिए। मुझे तो इस दर्शन की शास्त्रीयता और वैदिकता की प्रतीति है। भाष्यकार श्री भद्रेशदास स्वामी की विद्वत्ता को भी मैं जानता हूँ, लेकिन मुझे जो प्रतीति होती है, उसकी बात मैं सभी विद्वानों से करूँ, उसके बजाए विद्वान स्वयं ही स्वामीजी के साथ शास्त्रार्थ करके उसकी प्रतीति करें, वह अधिक इच्छनीय है। उसमें भी एक-एक पंडित उनसे व्यक्तिगत मिले, चर्चा और प्रश्नोत्तरी करें। अंत में समग्र दक्षिणी प्रांत के मूर्धन्य विद्वानों के साथ मिलकर स्वामीजी के साथ एक विनीत और प्रशांत शास्त्रार्थ करें, जिसमें अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन की प्रामाणिकता कितनी है? प्रस्थानत्रयी का आधार कैसा है? स्वामिनारायण सम्प्रदाय के ग्रंथों के आधार कैसे हैं? न्याय, व्याकरण आदि की दृष्टि से परिशुद्धि कैसी है? उसका अनुभव विद्वान स्वयं करें।'

बहुदिवसीय दार्शनिक चर्चा सत्र का आरम्भ

प्रथम दिवस से ही दार्शनिक संगोष्ठि का आरम्भ हो गया। कुलपतिश्री ने अत्यन्त ही सुंदर आयोजन किया था। अद्वैत, विशिष्टाद्वैत आदि वेदान्त के विद्वान तथा न्याय, व्याकरण आदि के विशारद विद्वान एक के बाद एक भद्रेशदास स्वामी के साथ अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन के प्रति विचार विमर्श करने हेतु आने लगे। ऐसा लगता था कि एक अभूतपूर्व ज्ञानयज्ञ का आरम्भ हुआ है! उसी प्रकार से पंडितों को वह

बात अनुभव होती थी।

लगातार 9 दिनों तक प्रात: से लेकर सायं तक कुलपति निवास का प्रांगण ऐसे ही विद्वानों से भरा रहता था। प्रत्येक दिन लगभग दस घंटे तक चर्चा चलती थी। उस चर्चा में भद्रेशदास स्वामी वचनामृत ग्रंथ पढ़कर भगवान श्रीस्वामिनारायण ने अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन किस प्रकार से प्रस्थापित किया है, उसी के सम्बंध में बात करते थे। सर्वप्रथम वे मूल गुजराती ग्रंथ पढ़ते और बाद में विद्वानों से भी उसका संस्कृत अनुवाद कराते थे। उसके बाद उन्हीं बातों को प्रस्थानत्रयी में किस प्रकार से लिखा गया है, उसमें अक्षर तथा पुरुषोत्तम का भेद कैसा है? जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म तथा परब्रह्म ये पाँच नित्य भेद की बातों को किस प्रकार से निरूपित किया गया है, इन सभी विषयों पर अत्यन्त ही गहन चर्चा होती थी।

वे विद्वान प्रतिदिन भद्रेशदास स्वामी के साथ हुई चर्चा की खबर कुलपतिश्री को उत्साहपूर्वक देते थे। कुलपति को भी आश्चर्यमिश्रित आनन्द होता था। शास्त्रार्थ के दौरान विद्वानों ने बहुत से प्रश्न प्रस्तुत किए जैसे –

- मैं शिक्षापत्री के बारे में जानता हूँ, परन्तु वचनामृत के विषय में पहली बार सुनता हूँ, तो उसका परिचय दीजिए और उसके प्रधान प्रतिपाद्य की जानकारी दीजिए।
- द्वैत दर्शन तथा विशिष्टाद्वैत दर्शन में जीवनमुक्ति नहीं माना जाता। क्या स्वामिनारायण भगवान जीवनमुक्ति मानते हैं?
- अद्वैत में एक ही तत्त्व माना जाता है। विशिष्टाद्वैत में तीन तत्त्व माने जाते हैं। स्वामिनारायण भगवान ने कितने तत्त्वों को माना है?
- द्वैत, विशिष्टाद्वैत आदि दर्शनों में दहराकाश परमात्मा को कहा है। स्वामिनारायण भगवान के मतानुसार दहराकाश क्या है?
- सूर्यावस्था का तात्पर्य क्या?
- कितने प्रमाण हैं? इत्यादि।

इस प्रकार विद्वानों ने जिन-जिन विषयों पर आशंका व्यक्त की, वे सभी आशंकाओं का भद्रेशदास स्वामी ने स्व सम्प्रदाय के अनुसार संतोषजनक शास्त्रीय समाधान प्रदान किया।

किसी कारणवश उसके पूर्व बहुत से विद्वानों की मान्यता थी कि यह सम्प्रदाय विशिष्टाद्वैत की ही एक शाखा है, परन्तु जिस समय उन्होंने वचनामृत के मूल वचनों का पठन किया, तो स्पष्टरूप से ज्ञात हुआ कि स्वामिनारायणजी का तत्त्वज्ञान 'अक्षरपुरुषोत्तम तत्त्वज्ञान' है, और रामानुज से बिलकुल भिन्न ही है। उन्होंने सम्प्रदाय के इतिहास और उसकी शाखाओं के विषय में जानकारी प्राप्त की।

सामूहिक शास्त्रार्थ सभा

इस शास्त्रार्थ सत्र के उपलक्ष्य में कुलपतिश्री ने ही 4 फरवरी, 2021 को राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में एक विद्वत् संगोष्ठि आयोजित की थी। विद्वत् संगोष्ठि में सहभागी होने के लिए तिरुपति के अतिरिक्त बेंग्लोर, चेन्नई, हैदराबाद, कांचीपुरम्, शृंगेरी आदि स्थानों से भी अनेक विद्वान पधारे हुए हैं। वेदान्त, न्याय, व्याकरण आदि क्षेत्रों में पारंगत और स्वमत में परिनिष्ठ ऐसे पंडितों में कांचीकामकोटि पीठ के शास्त्रार्थ सभा के अग्रणी विद्वान महामहोपाध्याय श्री आर. कृष्णमूर्ति शास्त्रीजी, शारदापीठ, शृंगेरी तथा कांचीकामकोटि पीठ की शास्त्रार्थ सभा के अग्रणी पंडित महामहोपाध्याय श्री मणिद्रविड शास्त्रीजी, पंडित श्रीपाद सुब्रमण्यम शास्त्रीजी, व्याकरण शास्त्र के पारंगत पंडित श्री जे. रामकृष्णजी, प्रखर नैयायिक पंडित श्री रामलाल शर्माजी, द्वैत सम्प्रदाय के अनुयायी पंडित श्री नरसिंहाचार्य पुरोहितजी, विशिष्टाद्वैत दर्शन के अनुयायी श्री पंडित श्री. श्री. रंगनाथनजी, अपर कालिदास कहे जानेवाले प्रसिद्ध कवि तथा वेदांत मीमांसा आदि शास्त्रों ने विशेषज्ञ पंडित श्री वी.एस. आर. कृष्णमूर्तिजी आदि विद्वान शामिल थे।

शोभायात्रा

इस शास्त्रार्थ की पूर्व रात्रि पर विश्वविद्यालय के विद्वानों ने एक विशिष्ट प्रस्ताव प्रस्तुत किया। उनकी इच्छा थी कि एक शोभायात्रा द्वारा सभी विद्वान अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की मूर्ति और अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन के भाष्यग्रंथों को, कुलपति निवास में जहाँ पिछले कई दिनों से शास्त्रार्थ चल रहा था, वहाँ से लेकर विश्वविद्यालय के शास्त्रार्थ भवन तक ले जाएँ। कुलपतिश्री ने स्वयं उस शोभायात्रा के प्रति अनुमति प्रदान करने की बिनती की। संतों की सहमति मिलते ही सभी लोग प्रसन्न हो गए।

इस प्रकार अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन की एक अभूतपूर्व शोभायात्रा तिरुपति विश्वविद्यालय में आयोजित की गई। बेंग्लोर स्थिर बी.ए.पी.एस. मंदिर से व्यवस्थापक संत सरलजीवनदास स्वामी ने अक्षरपुरुषोत्तम महाराज, प्रमुखस्वामी महाराज तथा महंत स्वामी महाराज का विधिवत् पूजन किया तथा महामहोपाध्याय स्वामी भद्रेशदासजी का पूजन किया। सभी विद्वानों की तरफ से भद्रेशदास स्वामी ने राष्ट्रीय संस्कृत विश्व विद्यालय के कुलपति श्री मुरलीधर शर्मा का पूजन किया।

शास्त्रार्थ प्रथम सत्र

उसके बाद शास्त्रार्थ के प्रथम सत्र का आरम्भ हुआ। पंडित श्री पंकज कुमार कार्यक्रम का संचालन कर रहे थे। वैदिक मंगलाचरण तथा दीप प्राकट्य के पश्चात् स्वामी

भद्रेशदासजी को शाल और श्रीफल से सम्मानित किया गया। उस दौरान स्वामिनारायण भगवान अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन उस दर्शन के भाष्य के प्रेरक परमपूज्य प्रमुखस्वामी महाराज, प्रकट ब्रह्मस्वरूप महंत स्वामी महाराज तथा भाष्यकार भद्रेशदासजी की प्रशस्ति करते हुए स्वरचित श्लोकों का गायन आधुनिक युग के कालिदास माने जानेवाले कविराज पंडितश्री जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति द्वारा किया गया।

इन सभी कार्यक्रमों के बाद विद्वत् संगोष्ठि के प्रथम प्रवचन की घोषणा की गई। सभी पंडित शांतचित्त भद्रेशदास स्वामी का प्रवचन सुनने के लिए तत्पर थे। सस्वर वैदिक मंगलगान करके भद्रेशदास स्वामी ने सत्संग दीक्षा में आए हुए मंगलाचरण के श्लोक के साथ अपना वक्तव्य संस्कृत भाषा में प्रारम्भ किया।

उसके पश्चात् राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के प्राध्यापक के. विश्वनाथ शास्त्रीजी ने सभी को स्वामिनारायण भगवान बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्था एवं महामहोपाध्याय स्वामी भद्रेशदासजी का परिचय कराया। उन्होंने कहा, 'स्वामिनारायण सम्प्रदाय वैदिक सनातन सम्प्रदाय है और इस सम्प्रदाय का दर्शन अर्थात् भगवान स्वामिनारायण द्वारा वचनामृत में प्रबोधित अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन है। इस दर्शन का प्रतिपादन करते हुए भाष्य ग्रंथ भी हैं। राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन का स्वागत सत्कार तथा समर्थन और स्थापन के लिए विश्वविद्यालय की तरफ से इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया है।' उसके बाद सभा में उपस्थित सभी विद्वानों का शब्दों द्वारा स्वागत किया गया।

उसके बाद उन्होंने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा –

'अहं साधुः भद्रेशदासः, अक्षरपुरुषोत्तमदर्शनकिङ्करः, गुरुहरिश्रीप्रमुखस्वामिमहाराजैः दीक्षितः, इदानीं गुरुहरिमहन्तस्वामिमहाराजानां निश्रायां सेवारतोऽस्मि... अर्थात् मैं साधु भद्रेशदास अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन का सेवक हूँ। प्रमुखस्वामी महाराज द्वारा दीक्षित हूँ और इस समय महंत स्वामी महाराज के आश्रय में सेवारत हूँ।'

उसके पश्चात् उन्होंने भगवान स्वामिनारायण, गुरुपरंपरा, संस्था के वरिष्ठ संतगण, अन्य सभी संतगण तथा सभी हरिभक्तों का स्मरण किया। उसका कारण बतलाते हुए उन्होंने कहा, 'मैं तो केवल शास्त्रों से अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन का परिचय देता हूँ, परन्तु वे सभी तो इस दर्शन को साक्षात् जीते हैं। इस दर्शन का ज्ञान केवल ग्रंथों से नहीं होता। उसके लिए इस दर्शन के आश्रितों को हमारी परम्परा का साक्षात् अनुभव करना पड़ेगा।'

अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन का यह वास्तविक परिचय था। नम्रता, उदारता और अन्य के लिए आदर! सभी के अंतर में प्रसन्नता का भाव छा गया।

उसके पश्चात् वचनामृत के साथ-साथ श्रीमद्भगवद्गीता, उपनिषद और ब्रह्मसूत्र में जहाँ-जहाँ अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन की विशिष्टता दिखाई देती है, उन सभी विशेषताओं का विषद निरूपण भद्रेशदास स्वामी ने शास्त्रों के प्रमाण के साथ-साथ किया।

उक्त परिचय के बाद आश्चर्यमुग्ध हो चुकी सभा को संकेत करके भाष्यकार भद्रेशदास स्वामी ने नम्रतापूर्वक कहा, 'ये सभी भाष्य मेरे द्वारा नहीं लिखे गए। इसे मैं स्पष्ट रूप से कहता हूँ; क्योंकि यह बुद्धि का कार्य वास्तव में नहीं है। यदि मैंने किया होता तो उसमें बहुत से दोष उत्पन्न होते। अक्षरपुरुषोत्तम महाराज द्वारा ही यह प्रेरित है।'

भद्रेशदास स्वामी ने विद्वानों द्वारा पूछे गए सभी प्रश्नों तथा अन्य तमाम प्रश्नों का यथोचित शास्त्र आधारित तथा संतोषजनक उत्तर दिये। उनके उत्तर से संतुष्ट हो चुके विद्वान भद्रेशदास स्वामी की विद्वत्ता से अत्यधिक प्रभावित हुए। प्रथम सत्र के अंत में भद्रेशदास स्वामी ने महंत स्वामी महाराज द्वारा प्रणीत सत्संग दीक्षा शास्त्र पर परिचयात्मक व्याख्यान दिया। छोटे बालक से लेकर प्रकान्ड विद्वान तक सभी लोगों के लिए उपयोगी ऐसे अभिनव युग के स्मृति ग्रंथ के समान उस शास्त्र का अवलोकन करते हुए सभी विद्वान अधिक प्रभावित हुए।

शास्त्रार्थ - द्वितीय सत्र

द्वितीय सत्र के आरम्भ में भद्रेशदास स्वामी ने अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन में गुरु का स्थान और उनकी महिमा सम्बंधी सैद्धान्तिक बातें की थीं। उन्होंने कहा, 'अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन में अक्षरब्रह्म भी परब्रह्म की भाँति मनुष्यरूप में जन्म लेते हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है। मनुष्य रूप अक्षरब्रह्म गुरुपद पर बिराजमान होते हैं। हमारा सम्प्रदाय गुरुमुखी सम्प्रदाय है। अक्षरब्रह्मरूपी गुरु में परब्रह्म साक्षात् निवास करते हैं, इसलिए उन्हें प्रत्यक्ष परमात्मा का स्वरूप भी कहा जाता है। अक्षरब्रह्म स्वरूप गुरु में दृढ़ प्रेम रखकर उनकी आज्ञानुसार जीवन जीना, इस दर्शन का यही सिद्धान्त है।'

अंत में गुरुहरि प्रमुखस्वामी महाराज तथा महंत स्वामी महाराज की शास्त्रीय महिमा सम्बंधी बातें की और कहा, 'आप जिस भाष्य की प्रशंसा करते हैं, वह भाष्य हमारे गुरु प्रमुखस्वामी महाराज की कृपा से ही तैयार हुआ है। उन्होंने ही इसे लिखने की आज्ञा दी थी। केवल आज्ञा ही नहीं,

शास्त्रार्थ में उपस्थित प्रकाण्ड विद्वानों के हृदय के उद्‌गार...

- 'भद्रेशदास स्वामी पर गुरु की अद्‌भुत कृपा है। जिस प्रकार से कालिदास पर देवी की कृपा थी, इसलिए उनकी शैली विशिष्ट प्रकार की थी। उसी प्रकार भद्रेशदास स्वामी पर उनकी गुरु की कृपा है। इसीलिए उनमें पांडित्य के साथ ही साथ सुमधुर एवं सरल शैली भी प्राप्त हुई है। यही उनकी विशेषता है। गुरुकृपा से जो पांडित्य प्राप्त होता है, वह परिश्रम करके प्राप्त किए हुए पांडित्य से भी श्रेष्ठ होता है, इसमें कोई संदेह नहीं। यहाँ पर वह सबकुछ दिखने को मिला है।'

  – महामहोपाध्याय पंडित श्री आर. कृष्णमूर्ति शास्त्री

- 'आज जिस प्रकार से गुरु की महिमा का गायन स्वामीश्री ने किया है, उसे सुनकर मेरे गुरु मेरे सामने प्रत्यक्ष बैठे हों, मैं ऐसा अनुभव करता रहा।'

  – पंडित श्री सुब्रह्मण्यमजी

- 'आज जो कुछ चर्चा की गई, उससे सिद्ध होता है कि अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन भी वैदिक परम्परा से ही प्राप्त हुआ दर्शन है। स्वामीजी ने प्रस्थानत्रयी के भाष्य की रचना की, इतना ही नहीं, बल्कि सूक्ष्मतापूर्वक उसका संयोजन भी किया है, जो विस्मयकारी है।'

  – महामहोपाध्याय श्री मणिद्रविड शास्त्रीजी

- 'Old is gold but new is platinum अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन के लिए यह उक्ति सर्वथा उचित है। अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन में किसी अन्य दर्शन के प्रति किसी प्रकार की ईर्ष्या अथवा द्वेष जैसा कुछ भी नहीं मिला। एक वैदिक दर्शन में जो लक्षण होने चाहिए उन सभी लक्षणों से युक्त यह दर्शन है। आज प्रात:काल में भद्रेशदास स्वामी का जो प्रवचन हुआ, उसमें मुझे उनके अंदर महामहोपाध्यात्व का दर्शन हुआ। उनके ग्रंथों को पढ़ता हूँ, तो उनमें मुझे भर्तृहरि की शैली दिखाई देती है।'

  – श्री जे. रामकृष्णजी

- 'अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन पूर्ण रूप से श्रौत दर्शन है। यहाँ जो कुछ भी प्रतिपादित हुआ है, वह सब उपनिषदों और गीता आदि शास्त्रों के आधार पर ही हुआ है। श्रुतिमाता को अद्वैत, विशिष्टाद्वैत आदि पुत्र थे। उनमें एक नये पुत्र का प्रादुर्भाव हो गया। अर्थात पुत्र जन्म का उत्सव होता है, तो संतोष होता है। स्वामीजी से अद्वैत की दृष्टि से मैंने जो-जो प्रश्न पूछे, उन सभी प्रश्नों का उत्तर उन्होंने दिया। प्रमाण के साथ उत्तर दिया। मैंने पूछा कि इस भाष्य की रचना के लिए कितना समय लगा होगा? उस समय उन्होंने कहा कि पौने दो वर्ष का समय लगा था। सभी पंडित जानते हैं कि एक वर्ष में, दो वर्ष में, तीन वर्ष में अथवा पाँच वर्ष में भी एक पुस्तक लिखने में कितना परिश्रम करना पड़ता है। फिर एक ऐसे दर्शन का ऐसा प्रमाणसहित भाष्य लिखने में लेखक को शास्त्रों में कितना प्रवीण होना पड़ता है, उसका अनुमान लगाया जा सकता है।'

  – श्री एम. एल. एन. मूर्ति

- 'भगवान श्रीस्वामिनारायणकृत जो वचनामृत है, वह केवल भावना नहीं, वेदराशियों का निष्कर्ष है। इस निष्कर्ष को प्रकट करने के लिए यह भाष्य उपयोगी होगा। वचनामृत में जो सिद्धान्त है, जो सामाजिक दृष्टि है, दार्शनिक तत्त्व है – उन सभी का अनावरण करने के लिए यह भाष्य, यह वादग्रंथ आदि सभी का उपयोग करके इस सिद्धान्त का व्यापक रूप से प्रचार करने के लिए जब हम सभी प्रयत्न करेंगे, तो उस समय समाज में वैदिक सम्प्रदाय का उज्जीवन निश्चित रूप से होगा। भद्रेशदासजी स्वामी केवल भाष्यकार ही नहीं, बल्कि सूत्रकार भी हैं। यहाँ पर सिद्धान्त सुधा ग्रंथ में उन्होंने केवल पाँच ही वाक्यों में समग्र गीता का निष्कर्ष गूँथ लिया है। एक-एक शब्द में गीता के एक-एक प्रकरण का स्मरण होता है। यही तो सूत्र का लक्षण है।'

  – श्री नारायण आचार्यजी

- 'मनुष्य के मन में जो आसुरी संपत्ति है, उसके निवारण के लिए ऐसा ही दर्शन कालांतर में अपेक्षित है। ऐसा ही दर्शन उचित है। उसके अतिरिक्त सत्संग दीक्षा ग्रंथ, जिसकी रचना की गई है, वैसा कार्य कौन कर सकता है? ऐसा अद्‌भुत कार्य इस सम्प्रदाय में हुआ है, उसके लिए उनके गुरु को धन्यवाद है।'

  – आचार्य गणपति भट्ट

सूचना भी दी थी। 'भाष्यों में द्वेषरहित बातें लीखिए।' यह उनकी आज्ञा थी।'

उसके बाद इस लंबे शास्त्रार्थ के अंतिम अध्याय में दस दिवस का परिश्रम और आज की सभा से अभिभूत हो चुके विद्वानों ने अपने-अपने अद्‌भुत अभिप्राय व्यक्त किए। (उसे इस लेख में बॉक्स के अंदर दिया गया है।)

कुलपतिश्री का अध्यक्षीय भाषण

उसके पश्चात् राष्ट्रीय संस्कृत विश्व विद्यालय के कुलपति श्री मुरलीधर शर्माजी ने अपना अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत किया। उनके वक्तव्य के एक-एक शब्द में उनका विशिष्ट भाव अनुभव किया जा सकता था। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा –

'सभी विद्वानों ने स्वीकार किया है कि अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन वैदिक और सनातन दर्शन है। यह किसी अन्य दर्शन की शाखा नहीं है, बल्कि स्वतंत्र, मौलिक और विशिष्ट दर्शन है। जिस प्रकार से अन्य दर्शनों में उपासना पद्धति,

तत्वज्ञान, सृष्टि मुक्ति, मीमांसा और प्रमाण मीमांसा होती है, उसी प्रकार इस दर्शन में भी है। इसीलिए यह वेदांत दर्शन है, ऐसा हम स्वीकार करते हैं। जिस प्रकार एक खूबसूरत बगीचे में चंपा, सेवंती आदि प्रकार के फूल एक दूसरे से अलग होते हुए भी एक ही बगीचे में रहकर अपना विशिष्ट रूप, गंध तथा स्पर्श आदि से आनन्द प्रदान करते हैं और शोभायमान रहते हैं, उसी प्रकार से वसंतरूपी उपवन में अद्वैत, विशिष्टाद्वैत तथा द्वैत आदि स्वरूपों में खिले हुए पुष्पों की भाँति यह अक्षरपुरुषोत्तम दर्शनरूपी पुष्प भी अपने विशिष्ट तत्वज्ञान के सिद्धान्तरूपी विशिष्ट स्वरूप गंध तथा स्पर्श आदि द्वारा वैदिक परम्परा के आश्रित सभी मनुष्यों को आनन्द प्रदान करता है, इसमें कोई शंका नहीं।

स्वामी भद्रेशदासजी ने शंकराचार्य, रामानुजाचार्य तथा मध्वाचार्य जैसे भाष्यकार आचार्यों की श्रृंखला में अधिकारपूर्वक प्रवेश किया हैं। उनके मुख से अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन समझने को मिला और उनके साथ विचार-विमर्श का अवसर प्राप्त हुआ, वह हमारा बहुत बड़ा भाग्य है। प्रमुखस्वामी महाराज का विश्व पर महान उपकार है, इसे मैं उसी रूप में स्वीकार करता हूँ।'

इतना कहकर उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक घोषणा की - 'अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन अत्यन्त ही वैदिक है और यह भाष्य श्रुति के अनुसार है।' अंत में उन्होंने राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा निर्मित समर्थन आलेख का भी पठन किया। समर्थन आलेख के मुख्य अंश इस प्रकार से है -

'लगातार एक सप्ताह तक अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन के विचार-विमर्श के अंत में हम सभी विद्वान एकसाथ मिलकर घोषणा करते हैं कि - परब्रह्म स्वामिनारायण प्रबोधित अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन एक वैदिक सनातन दर्शन है तथा एक विशिष्ट मौलिक और अन्य दर्शनों से विलक्षण दर्शन है। प्रस्थानत्रयी स्वामिनारायण भाष्य के निर्माण से अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन भविष्य में चिरकाल तक बना रहेगा, यह एक निर्विवाद सत्य है। स्वामी भद्रेशदासजी द्वारा एक विशिष्ट सिद्धान्त प्रवर्तक युगकार्य सम्पन्न हुआ है। आदि शंकराचार्य की भाँति उनकी शास्त्र प्रणयन शैली सरल, स्पष्ट, अर्थगंभीर, प्रसाद मधुर, द्वेष आदि दोषरहित आदि स्व सिद्धान्त की स्थापना के लिए समर्थ है। ऐसे इस ग्रंथ का अवलोकन करनेवाले सभी विद्वानों की अनुभूति है।

सम्पूर्ण प्रस्थानत्रयी के भाष्यों का प्रणयन करनेवाले स्वामी भद्रेशदासजी शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य आदि आचार्यों की पंक्ति में प्रवेश करने के लिए हर प्रकार से योग्य हैं, इसलिए वे महाआचार्य की पदवी सुशोभित कर रहे हैं, ऐसा सभी विद्वानों के हृदय का अभिप्राय है।'

शास्त्रार्थ समापन

अंत में वेदोक्त शांतिमंत्र द्वारा परब्रह्म स्वामिनारायण प्रबोधित अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन सम्बंधी विद्वत्सत्संगगोष्ठि का समापन किया गया। इस अभूतपूर्व अवसर के साक्षी के रूप में जो निर्णय हुआ है, उसमें अपनी सहमति व्यक्त करते हुए सभी विद्वानों ने एक पत्र पर हस्ताक्षर भी किए।

इस प्रकार दक्षिण भारत के मूर्धन्य विद्वानों ने एकसाथ मिलकर तिरुपति में राष्ट्रीय-संस्कृत-विश्वविद्यालय के तत्वाधान में परब्रह्म स्वामिनारायण प्रबोधित अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन का स्वागत-सत्कार, समर्थन और स्थापन किया वह समग्र दर्शन विश्व के लिए एक ऐतिहासिक और उल्लेखनीय घटना बन गई। ◆

श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के लिए निधि समर्पण समारोह

श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के कोषाध्यक्ष पूज्य गोविंददेवगिरिजी महाराज तथा मुख्यमंत्री श्री विजयभाई रूपाणी की उपस्थिति में स्वामिनारायण संस्था ने आर्थिक अनुदान प्रदान किया

तीर्थराज अयोध्या अर्थात् मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम की जन्मभूमि, जो हजारों वर्षों से करोड़ों भारतीयों की पवित्र आस्था का अनोखा केन्द्र बना हुआ है। भगवान श्रीस्वामिनारायण की वह बाललीलाओं की रमणभूमि, जहाँ से बालघनश्याम के उस आंदोलन का प्रभाव गुजरात और अब विश्व के कोने-कोने में फैलता जा रहा है। उस पवित्र भूमि पर करोड़ों आस्थावान हिन्दुओं के स्वाभिमान का एक अनोखा स्थान निर्मित हो रहा है - श्रीराम जन्मभूमि पर निर्माणाधीन श्रीराम मंदिर। पिछले पाँच-पाँच शताब्दियों के संघर्ष, संतों-भक्तों की तपस्या-श्रद्धा-भक्ति और उनके बलिदान अब सार्थक हो रहे हैं। इसीलिए विश्वभर में निवास करनेवाले भारतीयों के रोम-रोम में गौरवपूर्ण हर्ष का अनुभव होता है और उसका प्रतिबिंब अनुभव किया जाता है - मंदिर के निर्माण के लिए सभी लोगों द्वारा बहाए गए दान के प्रवाह में।

भगवान श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्या में निर्माणाधीन निधि-समर्पण के लिए परमपूज्य महंत स्वामी महाराज की प्रेरणा से बी.ए.पी.एस. संस्था द्वारा माननीय मुख्यमंत्री श्री विजयभाई रूपाणी की उपस्थिति में समारोह का आयोजन 13 फरवरी, 2021 को बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण मंदिर शाहीबाग अहमदाबाद में हुआ था, जिसमें श्रीराम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र के ट्रस्टी तथा कोषाध्यक्ष परमपूज्य श्री गोविंददेवगिरिजी महाराज ने विशेष रूप से पधारकर आशीर्वचन प्रेषित किया था।

सोशल डिस्टन्स आदि नियमों के पालन के साथ लगभग 150 विशेष रूप से आमंत्रित भक्तों-भाविकों की उपस्थिति में उस समारोह का आयोजन किया गया।

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज तथा रामजन्मभूमि मंदिर के कुछ अविस्मरणीय संस्मरणों को वीडियो के माध्यम से सभी ने देखा, जिसमें स्वामीश्री ने रामजन्मभूमि आंदोलन में दिए गए भक्तिपूर्ण सहयोग की हृदयस्पर्शी प्रस्तुति भी थी।

उसके बाद स्वामीश्री की जीवन-भावना के प्रतीक रूप में राम मंदिर के निर्माण के लिए 2,11,11,111 का चेक श्री बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्था की तरफ से संस्था के अंतर्राष्ट्रीय संयोजक पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी ने, कोषाध्यक्ष पूज्य श्री गोविंददेवगिरिजी महाराज तथा मुख्यमंत्रीश्री को अर्पण किया।

उक्त अवसर पर गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री विजयभाई रूपाणी ने अपने सम्बोधन में कहा, 'वर्षों पूर्व प्रमुखस्वामी महाराज ने रामशिला का पूजन किया था और उस समय आशीर्वाद दिया था। तब से लगातार प्रमुखस्वामी महाराज से लेकर महंत स्वामी महाराज इस मंदिर के निर्माण में योगदान दे रहे हैं।'

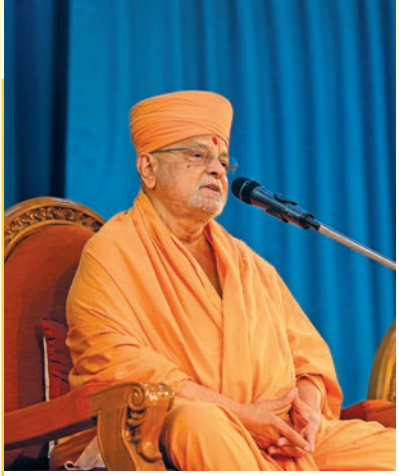

बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्था की तरफ से परम पूज्य महंत स्वामी महाराज की प्रेरणा से पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी ने श्रीराम मंदिर के निर्माण में बी.ए.पी.एस. संस्था का सहयोग घोषित किया - रुपये 2,11,11,111 की सेवा अर्पण की...

श्री गोविंददेवगिरिजी ने कहा : 'भगवान श्रीराम समग्र सद्‌गुणों के मूर्तिमान स्वरूप थे। जब उनका मंदिर स्थापित हो रहा है, तो उनके दिव्य गुणों का भाव समग्र देश में जाग्रत होगा। यह देश केवल सोने की चीड़िया ही नहीं, बल्कि सोने का सिंह बनकर विश्व के समक्ष पराक्रम का दर्शन कराएगा।

सोशल डिस्टन्स तथा आनुसंगिक व्यवस्थाओं के साथ सीमित संख्या में आमंत्रित संतों की उपस्थिति में आयोजित समारोह में मंच पर श्रीराम मंदिर निधि, समर्पण समीति, गुजरात के अध्यक्ष श्री गोविंदभाई धोलकिया तथा विश्व हिन्दू परिषद के गुजरात के अध्यक्ष दीलिपभाई त्रिवेदी भी उपस्थित थे।

यहाँ उल्लेखनीय है कि श्रीराम मंदिर के भूमिपूजन समारोह के लिए बी.ए.पी.एस. संस्था के आध्यात्मिक अनुगामी परमपूज्य महंत स्वामी महाराज श्रीराम यंत्र का पूजन करके इस मंदिर का कार्य निर्विघ्न पूर्ण करके भव्य मंदिर बने, राम राज्य की स्थापना हो और विश्व में शांति स्थापित हो, उसके लिए भगवान के चरणों में प्रार्थना की थी। ◆

(पृष्ठ 15 का शेषांश)

गुरु के प्रति दिव्यभाव

गुरुभक्ति में गुरु के प्रति निरन्तर दिव्यभाव रखना सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। गुरु के प्रत्येक चरित्र में दिव्यता देखने की ऐसी दृष्टि मुमुक्षु का आंतरिक रूपान्तर करती है। गुणातीतानंद स्वामी की बातों में उनसे एक प्रश्न पूछा गया कि 'जिसे देखकर देखनेवालों का अन्तर शीतल हो जाता है, वैसे गुण आने का क्या कारण है?' स्वामी बोले, 'ऐसे गुण तो आते ही नहीं, वह चाहे जितना सत्पुरुष के साथ रहे, या सेवा करे, चाहे जितना उनका कहना माने तथा करे भी, तो भी बड़े (सन्त) के गुण आते ही नहीं। जब उन्हें निर्दोष एवं सर्वज्ञ जाने तथा उनके साथ किसी प्रकार का अन्तराय (पर्दा) न रखें, तब सत्पुरुष के गुण मुमुक्षु में आते हैं।[53]

गुरु को क्या समझकर उनकी सेवा की जाती है, वह कितना महत्वपूर्ण है, उसे इन वचनों पर से समझा जा सकता है। यहाँ पर गुरु को निर्दोष समझने की बात की गई है। गुरु में निर्दोष बुद्धि अर्थात् उसके विषय में योगीजी महाराज ने कहा है, 'जिस प्रकार से श्रीहरि अक्षरधाम में साकार बिराजमान है, उसी प्रकार से मुझे प्रकट गुरु मिले हैं। उनमें मनुष्यभाव अथवा देहभाव नहीं है। जिसकी ऐसी समझ हो, वही निर्दोषबुद्धि।'[54]

गुरु में ऐसा दिव्यभाव जीव का रूपान्तरण कर देता है। वचनामृत में भगवान श्रीस्वामिनारायण प्रश्न पूछते हैं कि जीव जगत को नाशवान समझता है और यह भी मानता है कि चैतन्य (जीव) देह का त्याग करके अलग हो जाता है; फिर भी, उसके मन से जगत की प्रधानता नहीं मिटती। यद्यपि वह परमेश्वर को समस्त सुखों का सिन्धु मानता है, फिर भी परमात्मा में उसका चित्त नहीं लग पाता। उसके हृदय में सत्संग की भी प्रधानता नहीं रहती तथा धन, स्त्री आदि सांसारिक वस्तुओं से उसकी प्रीति नहीं मिटती, इसका क्या कारण है?

इस प्रश्न का उत्तर समझाते हुए कहते हैं कि ''ब्रह्मादि को भी दुर्लभ ऐसा यह सत्संग प्राप्त होने पर यदि कोई भक्त परमेश्वर को छोड़कर अन्य पदार्थ से अपना चित्त लगाये रखता है, तो इसका कारण यही है कि इस जीव को भगवान के परोक्षस्वरूप में जैसी प्रतीति होती है, वैसी दृढ़ प्रतीति भगवान के प्रत्यक्षस्वरूप में नहीं होती है! श्रुति में यही बात बताई गई

53 अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी की बातें - 3/34

54 साधु ईश्वरचरणदास, ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज जीवन चरित्र भाग-6, स्वामिनारायण अक्षरपीठ, तीसरा संस्करण - जून 2010, पृ. 444

है कि परोक्ष देवों में जीव को जो प्रतीति है, वैसी प्रतीति यदि प्रत्यक्ष गुरुरूप हरि में हो जाए तो, जितने भी अर्थ प्राप्त होने को कहा है, वे समस्त अर्थ उसको प्राप्त हो जाते हैं।''[55]

श्वेताश्वतर उपनिषद में समग्र उपदेश के अंत में साधना की सिद्धि का उपाय बतलाते हुए उपसंहार किया गया है।

यस्य देवे पराभक्तिर्यथा देवे तता गुरौ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः॥[56]

मनुष्य रूप में दिखाई देते गुरु मनुष्य है ही नहीं। वे तो भगवान के ही प्रत्यक्ष स्वरूप हैं। यदि ऐसी दृष्टि मिल जाए, तभी गुरुभक्ति का रहस्य समझ में आता है। इसीलिए सत्संगदीक्षा ग्रंथ में परमपूज्य महंत स्वामी महाराज ने लिखा है –

प्रीतिः कार्याऽऽत्मबुद्धिश्च ब्रह्माऽक्षरे गुरौ दृढा।
प्रत्यक्षभगवद्भावात् सेव्यो ध्येयः स भक्तितः॥108॥

'अक्षरब्रह्म गुरु के प्रति दृढ़ प्रीति और आत्मबुद्धि रखें। उनके प्रति प्रत्यक्ष भगवान का भाव लाकर भक्ति करके उनकी सेवा तथा ध्यान करें।'[57]

गुरु के साथ एकात्मभाव

परब्रह्म भगवान श्रीस्वामिनारायण प्रबोधित अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन के अनुसार स्वयं अक्षरब्रह्म ही गुणातीत गुरु के रूप में प्रत्यक्ष रहते हैं। ऐसे अक्षरब्रह्म गुरु के साथ एकात्मभाव करने से ही ब्राह्मी स्थिति प्राप्त होती है। भगवान श्रीस्वामिनारायण ने कहा है, 'जीव को देह, इन्द्रियों तथा विषयों का अधिक संग हुआ है। अतः संगदोष के कारण यह जीव देहादिरूप हो गया है। जब यह जीव उनके संग को छोड़कर यह समझने लगता है कि 'माया से मुक्त तथा माया से परे रहनेवाला ब्रह्म ही मेरा स्वरूप है और इसी प्रकार निरंतर मनन करते हुए यदि वह ब्रह्म का संग करता है, तो ब्रह्म का गुण उस जीव में आ जाता है।'[58]

आत्मा की ब्रह्म के साथ एकता रखने की इस साधना को स्पष्ट करते हुए योगीजी महाराज ने कहा है, 'प्रकट सत्पुरुष को अपनी आत्मा मान लो। सत्पुरुष के साथ अपनत्व का भाव रखें। आत्मा सबीज है। ऐसा मानें, परन्तु आत्मा निर्बीज है, ऐसा मनन करेंगे, तो अक्षररूप नहीं हो पाएँगे। सत्संग होने से क्या हुआ? सत्पुरुष में आत्मबुद्धि। जिसे सत्संग हुआ है, उसे सहज ही सत्पुरुष अपनी आत्मा मानते हैं।'[59]

भगतजी महाराज के जीवन में गुरुभक्ति की इस सर्वोच्च स्थिति का दर्शन होता है। एकबार गुणातीतानंद स्वामी ने भगतजी को सभा में बुलाने के लिए बालमुकुन्द स्वामी को भेजा। उस समय भगतजी महाराज गहरी नींद में होने से उन्हें जगाने पर भी वे जागे नहीं।

जिस समय बालमुकुन्द स्वामी ने वह समाचार गुणातीतानंद स्वामी को दिया, तो स्वामीजी ने उनसे पूछा कि आप क्या कहकर उन्हें जगाते थे? बालमुकुन्द स्वामी ने कहा, 'प्रागजी भगत' यह कहकर जगाता था। वह सुनकर स्वामीजी ने कहा, 'अब जाकर कहो कि गुणातीत उठो। भगतजी अपना भाव भूलकर गुणातीतानंद स्वामी के रूप में एक हो गये हुए थे, इसलिए जिस समय उन्हें गुणातीत उठो कहा गया, तो वे तुरन्त ही उठ गए।'[60]

अक्षरब्रह्म स्वरूप गुरु के साथ ऐसी एकात्मता से जिस समय ब्रह्म भाव की सिद्धि होती है, उस समय परब्रह्म की प्राप्ति का अधिकार प्राप्त हो जाता है।[61] ऐसी स्थिति को ही आत्यंतिक मुक्ति कहा जाता है।[62]

वैदिक सनातन धर्म के शास्त्रों ने तथा उनकी धारा में आध्यात्मिक ऊँचाई को प्राप्त कर चुके महापुरुषों ने जीवन की सार्थकता के लिए सच्चे गुरु की संगत को अनिवार्य कहा है। जैसा गुरु का सामर्थ्य, वैसी ही शिष्य को प्राप्ति होती है। अक्षरब्रह्म गुरु की सेवा जिस समय प्रेमपूर्वक आज्ञा का पालन करके, दिव्यभाव के साथ महिमा समझकर की जाती है, तो उनके साथ में एकात्मपन सिद्ध होता है और परब्रह्म की पराभक्ति का अधिकार प्राप्त होता है।

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज स्वयं ऐसे आदर्श गुणातीत गुरु थे। असंख्य लोगों ने उन्हें गुरु के रूप में स्वीकार करके जीवन को सार्थक बनाया है। उनका आश्रय लेकर असंख्य लोगों ने परब्रह्म की साक्षात् अनुभूति की है और इतना होने पर भी वे एक आदर्श गुरुभक्त भी थे, जिन्होंने अपने गुरु को ही अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया था।

वर्तमान समय में प्रकट ब्रह्मस्वरूप महंत स्वामी महाराज ऐसा ही आदर्श प्रस्तुत कर रहे हैं। उनके जीवन से ऐसी गुरुभक्ति की प्रेरणा प्राप्त करके हम भी सार्थकता का अनुभव करें, यही अभ्यर्थना। ◆

55 वचनामृत गढडा अंत्य प्रकरण-2
56 श्वेताश्वतर् उपनिषद 6/23
57 सत्संगदीक्षा-108
58 वचनामृत गढडा मध्य प्रकरण-31
59 योगीवाणी, स्वामिनारायण अक्षरपीठ, दूसरा संस्करण-जुलाई 2010, पृ. 26
60 हर्षदराय त्रिभुवनदास दवे, ब्रह्मस्वरूप श्री प्रागजी भक्त जीवन चरित्र, स्वामिनारायण अक्षरपीठ, बारहवाँ संस्करण – अप्रैल 2019, पृ. 82
61 ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति।
सम: सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम्॥ (श्रीमद्भगवद्गीता 18/54)
62 अक्षरब्रह्मसाधर्म्यं संप्राप्य दासभावतः।
पुरुषोत्तमभक्तिर्हि मुक्तिरात्यन्तिकी मता॥ (सत्संगदीक्षा-291)

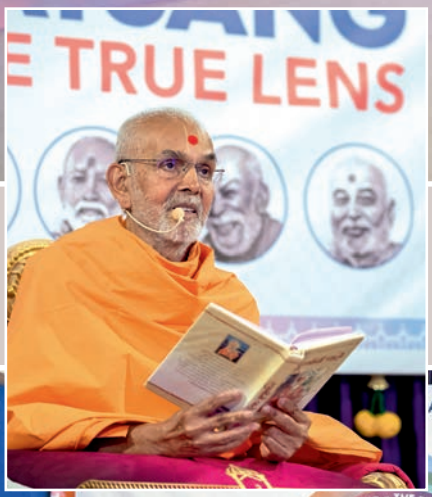

नासिक में शिखरबद्ध मंदिर की स्तंभरोपण वेदोक्त विधि

(ऊपर) पौराणिक नगरी नासिक में निर्माणाधीन शिखरबद्ध बी.ए.पी.एस. मंदिर के प्रथम स्तंभरोपण की वेदोक्त विधि महंत स्वामी महाराज के करकमलों द्वारा ऑनलाइन माध्यम से संपन्न हुई। (नीचे) यु.के. तथा युरोप में आयोजित एक दिवसीय वसंत शिविर का ऑनलाइन माध्यम से विधिवत् उद्घाटन करते हुए महंत स्वामी महाराज (21 फरवरी, 2021)

Swaminarayan Prakash Hindi, March-2021. Published & Posted at Ahmedabad, P.S.O. 10th on Every Month, Licenced to post without prepayment No. PMG/NG/029/2021-2023, Valid upto 31-12-2023, Regd. No. GAMC-719/2021-2023, Valid upto 31-12-2023, RNI-43538/85.

ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज के प्राकट्य पर्व पर वसंतोत्सव सत्संग दीक्षा एवं स्वामीश्री की ऐतिहासिक तुलाविधि

सन 2020 में ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज के प्राकट्य दिवस वसंत पंचमी पर सत्संग दीक्षा ग्रंथ लिखने का आरम्भ हुआ। इस ग्रंथ के श्रीगणेश का इस वसंत पंचमी पर एक वर्ष पूर्ण हुआ। नेनपुर में इस शास्त्र और उसके रचयता प्रकट ब्रह्मस्वरूप महंत स्वामी महाराज की परब्रह्म भगवान स्वामिनारायण और अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी की चलमूर्तियों के साथ वेदोक्त विधिपूर्वक तुलाविधि की गई। प्रकट ब्रह्मस्वरूप महंत स्वामी महाराज द्वारा रचित सत्संग दीक्षा ग्रंथ, वैदिक परम्परा और परब्रह्म भगवान श्रीस्वामिनारायण से लेकर गुरु परम्परा के उपदेशों का निष्कर्ष है, जिसमें आज्ञा और उपासना की दृढ़ता प्रस्तुत की गई है।

Printed and Published by Sadhu Swayamprakashdas on behalf of Swaminarayan Aksharpith and Printed at Swaminarayan Mudran Mandir, Shahibaug Road, Ahmedabad - 380 004 and Published from Swaminarayan Aksharpith, Shahibaug Road, Ahmedabad - 380 004. Editor - Sadhu Swayamprakashdas